जुलाई 2002
Rs. 10/-
चन्दामामा
Vapa

खुशबू की राह पर...

चन्दना ने पुराने चन्दन वृक्ष पर सम्मोहित-सी नजर डाली।
यह कितना पुराना है ! कितना भव्य ! और क्या खुशबू देता है !

यह क्या? क्या तुम चन्दन से बने साबुन, पावडर या पेस्ट का प्रयोग नहीं करते? दो हजार वर्ष पूर्व आयुर्वेद ने अम्हौरी के इलाज के लिए चन्दन की लकड़ी की उपयोगिता को पहचाना। अपनी रचना 'ऋतुसंहार' में कालिदास ने वर्णन किया है कि कैसे सुन्दर बालाएँ शरीर को शीतल बनाये रखने और फोड़ा-फुंसियों से बचाने के लिए चन्दन की लकड़ी का लेप लगाया करती थीं।

चन्दन की लकड़ी का वर्णन अन्य प्राचीन भारतीय शास्त्रों के अतिरिक्त, ईसा पूर्व पाँचवीं शताब्दी की एक वैदिक टीका **निरुक्त** में, पतंजलि के **महाभाष्य** में (ईसापूर्व १०० वर्ष), कौटिल्य के **अर्थशास्त्र** में (ईसापूर्व २०० वर्ष), तथा **रामायण** और **महाभारत** में मिलता है।

द हाउस ऑफ
मैसूर सन्दल ८० से भी अधिक वर्षों से सीधे आपके घरों में चन्दन की खुशबू बिखेर रहा है।

खुशबूदार मजा !

तुम अपनी चन्दन की लकड़ी को कितनी अच्छी तरह जानते हो? यह जानने के लिए निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो :

१. चन्दन की लकड़ी शंकुधारी/सदाबहार/पतझड़ी वृक्ष है।
२. चन्दन वृक्ष की फसल-कटाई वृक्ष काट कर/जड़ से उखाड़ कर की जाती है।
३. चन्दन का तेल छाल/अन्त:काष्ठ/वृक्ष के पत्तों से निकाला जाता है।
४. चन्दन का वृक्ष १०-२०/६०-७०/१००-१२० वर्षों में पूर्ण रूप से परिपक्व हो जाता है।

उत्तर
१. सदाबहार २. जड़ से उखाड़ कर
३. अन्त:काष्ठ ४. ६०-७० वर्ष में

HERO
CYCLES

विशेष आकर्षण

सम्पुट - १०६ जुलाई - २००२ सञ्चिका - ७

राजभक्ति

१९

कैसे वज्र अधिक शक्तिशाली बना?

२४

माया सरोवर

११

रहस्य सम्मान

२७

अन्तरङ्गम्

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20
Remittances in favour of Chandamama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail : subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा
बारह अंक ९०० रुपये
भारत में बुक पोस्ट द्वारा १२० रुपये
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या
मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड'
के नाम भेजें।

पाठकों के पत्र

✤ पुनः प्रारंभ के बाद चन्दामामा पत्रिका का रूप-रंग ही बदल गया। वह अपना प्रकाश चहु दिशाओं में बिखेर रहा है। कहानियाँ अति रोचक लग रही हैं। मानव जीवन कैसे सार्थक हो, इसपर सुलभ शैली में सुंदर से सुंदर कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। ये कहानियाँ बच्चों और बड़ों के लिए भी शिक्षाप्रद हैं।

हर महीने में सभी भाषाओं में समान कहानियाँ प्रकाशित होती हैं। इससे अन्य भाषाओं को सीखने की इच्छा रखनेवालों को प्रेरणा मिलती है। भारतीय संस्कृति की विरासत का यह प्रतीक है। चन्दामामा की कांति सर्वत्र व्याप्त हो।

- श्रीमन्नारायण अग्रवाल, वर्धा

✤ आज भी भारत भर के बच्चों के मन को बहलाता है 'चन्दामामा'। मेरे बच्चे 'चन्दामामा' का पठन अंग्रेज़ी में करते हैं, और अगले अंक की प्रतीक्षा बड़ी बेचैनी से करते रहते हैं। कहानी के साथ जो चित्र दिये जाते हैं, वे बहुत सुंदर लगते हैं। यह चन्दामामा की ख़ासियत है।

- निर्मला देवी, इलाहाबाद

✤ पिछले बीस सालों से चन्दामामा पढ़ता आ रहा हूँ। परंतु आजकल चन्दामामा में विविध संस्कृतियों के शीर्षक अधिकाधिक छप रहे हैं। पर हम चाहते हैं कि इनके बदले विनोद से भरे ज्ञानवर्धक व नैतिकतापूर्ण कहानियाँ प्रकाशित करें। कहानियों के लिए अधिक प्रधानता दें।

- कश्यप, रायपुर

✤ विघ्नेश्वर तथा माया सरोवर आप पुनः छाप रहे हैं। इसके लिए तहेदिल से शुक्रिया। मेहरबानी करके आप उन्हें संक्षिप्त न कीजिएगा। पुराने चित्रों को हटाये बिना यथावत् छापियेगा। चित्रों के रंगों पर और ध्यान दीजियेगा।

- एक पाठक, उज्जैन

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

हम शान्ति चाहते हैं, युद्ध नहीं

हम बहुत कठिन समय से गुजर रहे हैं। हर रोज समाचार पत्र सीमा पर हो रही गोलाबारी की खबरों से भरे रहते हैं। भारत और पाकिस्तान के नेता एक दूसरे पर युद्ध भड़काने और आतंक फैलाने का आरोप लगाते हुए अपने वक्तव्य जारी करते रहे हैं। तनाव बढ़ता जा रहा है।

हमें याद रखना चाहिए कि युद्ध लाता है केवल बिनाश और दुर्दशा ! यह खबर पहले ही आ चुकी है कि कश्मीर के सभी आतंकित ग्रामीण अपने गाँवों को उजाड़ छोड़कर भाग रहे हैं। उनकी दुर्दशा की कल्पना कीजिए। घर और सम्पत्ति छोड़कर, जिन्हें बनाने में उनका सारा जीवन लग गया होगा। धान की लहलहाती फसलों से भरे खेतों को छोड़कर, और भी न जाने कितनी फसलों को छोड़कर जिनसे हजारों परिवारों को खाना मिलता और किसानों, वितरकों, परिवाहकों, दुकानदारों तथा कितने अन्यों को रोजी मिलती।

युद्ध का अर्थ है मौत - सैनिकों की और उन निर्दोष व्यक्तियों की भी जो जवाबी गोलाबारी की चपेट में आ जाते हैं। युद्ध का अर्थ है - कीमतों की बृद्धि, बस्तुओं का अभाव ... एक शब्द में - संघर्ष। आज हमें जरूरत है शान्ति की - युद्ध की नहीं ! शान्ति अचानक आकाश से नहीं टपकती। यह केवल तभी आ सकती है जब समस्या के मूल कारणों को निर्मूल कर दिया जाये। यह पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था।

दो राष्ट्रों के बीच की बेशुमार समस्याओं के मूल कारणों को दूर करने के लिए, पचास साल पुराने बर्तमान सन्देह और घृणा के बीजों को हटाने के लिए दोनों को कठिन श्रम करना पड़ेगा। चन्दामामा, जो इस महीने अपनी जयन्ती मना रहा है, दोनों देशों के सही दिशा में सोचनेवाले प्रत्येक व्यक्ति के साथ मिलकर शान्ति की अपील करता है - भावी पीढ़ियों के लिए !

सम्पादक : *विश्वम*
Visit us at : http://www.chandamama.org

सुकर्म का सपना

साधु सुकर्म अपने शिष्य कौशल्य के साथ देश में पर्यटन कर रहे थे। एक दिन रात होते-होते वे एक छोटे गाँव में पहुँचे और एक गृहस्थ के घर के चबूतरे पर दोनों लेट गये।

वह घर रतन नामक एक किसान का था। सबेरे ही महेश नामक एक किसान हल लिये वहाँ आया और उसे दीवार के सहारे खड़ा करके रख दिया। फिर उसने दरवाज़ा खटखटाया। जब रतन बाहर आया तो उससे यह कहकर वह चलता बना कि हल से जो काम था, पूरा हो गया और अब लौटा रहा हूँ।

तब तक सूरज निकल आया था। बाहर आकर रतन ने हल को देखा। हल की कुसी पूरी टूट चुकी थी। उसने तुरंत अपनी पत्नी को बुलाकर कहा, ''देखा, महेश कितना बड़ा धूर्त है। हल की कुसी तोड़ दी और बिना कुछ कहे यों चला गया, मानों वह कुछ भी नहीं जानता। देखना, मैं उसकी कैसी खबर लेता हूँ।'' कहते हुए वह कुदाल हाथ में लिए महेश के घर गया और उसकी बैलगाड़ी के पहिये को तोड़ डाला।

महेश यह देखकर आपे से बाहर हो गया और घर के अंदर जाकर एक बड़ा डंडा ले आया। उसने रतन के सिर पर डंडा मारकर उसे घायल कर दिया।

रतन अपने को काबू में रख नहीं सका और उसने भी कुदाल से महेश के सिर को घायल कर दिया। महेश ने अपने दोनों हाथों से अपने सिर को पकड़ लिया और नीचे गिर पड़ा। चोट जबरदस्त थी, इसलिए खून निकलने लगा।

खून देखते ही रतन के हाथ-पाँव ठंडे पड़ गये। वह घबरा गया। वह अपने घर की तरफ़ भागता हुआ गया और अंदर जाकर दरवाज़ा बंद कर लिया। चंद पलों में यह खबर महेश के दोनों भाइयों तक पहुँची। वे कुल्हाड़ी और कुदाल लिये

- राधेश्याम तिवारी -

रतन के घर गये।

जब यह बात रतन के मामा और उसके साले को मालूम हुई तब वे भी जो भी हथियार हाथ लगा, उसे लेकर वहाँ पहुँच गये। फिर क्या था, एक-एक करके गाँव के लोग वहाँ आने लगे। भीड़ जमा हो गयी।

रतन के मामा और साले तथा महेश के भाइयों के बीच में पहले तू-तू मैं-मैं हुआ। वे एक दूसरे को गालियाँ और मार डालने की धमकी देते रहे। और आखिर एक-दूसरे से लड़ने-भिड़ने के लिए तैयार हो गये।

सुकर्म यह सब कुछ देख रहे थे। उन्हें लगा कि बात ज़रूरत से ज़्यादा बढ़ रही है और हत्याकांड किसी भी क्षण होने ही वाला है। इसलिए वे चबूतरे से उतरे और दोनों के बीच में आकर खड़े हो गये। अकस्मात् अपने बीच में खड़े साधु को देखकर सब चकित रह गये। सुकर्म ने महेश के भाइयों को और रतन के सगों को शांत किया। फिर घर के अंदर जाकर रतन को समझा-बुझाकर बाहर ले आये। वे अपने साथ उसे महेश के पास ले गये।

तब तक महेश थोड़ा-बहुत संभल गया था। वैद्य ने उसके सिर पर पट्टी बांध दी थी।

सुकर्म ने रतन को महेश के बगल में बिठाया और ऊँचे स्वर में कहा जिससे सब सुन सके, "भाइयो, हम इस गाँव से गुजरते हुए मुसाफिर हैं। रात को रतन के घर चबूतरे पर लेटे थे। ठंडी हवा चल रही थी, इसलिए हम जल्दी ही सो गये। उस नींद में मैंने एक सपना देखा। मैंने उस सपने में देखा कि महेश, रतन को हल सौंपकर वापस

जा रहा है। फिर बाद में जब रतन ने हल की टूटी कुसी देखी तो तुरंत उसने महेश को बुलाया और उससे पूछा कि कुसी कैसे टूट गयी। महेश ने अपनी ग़लती मान ली, क्षमा माँगी और वचन दिया कि उसे ठीक करके लौटाऊँगा। वह हल लेकर लोहार के पास ले जाने लगा। इतने में मेरा सपना टूट गया और मैं जान नहीं पाया कि आगे क्या हुआ।''

साधु की बातें सुनते ही महेश ने महसूस किया कि उससे भूल हो गयी। इतने में महेश की पत्नी उससे कहने लगी, ''आपसे बताना भूल गयी। कल शामको नौकर जब लाठी से भैंस को मारने लगा तब वह चूककर हल की कुसी को जा लगी और वह टूट गयी।''

महेश दुखी होकर कहने लगा, ''माफ़ करो रतन। भूल हो गयी। मैंने देखा नहीं था कि हल की कुसी टूट गयी।''

रतन की आँखों में आँसू उमड़ आये। उसने महेश के दोनों हाथों को पकड़ते हुए कहा, ''माफ़ी तुम्हें नहीं, मुझे माँगनी चाहिए। हल की कुसी के टूटने की बात मुझे तुमसे कहनी थी। उल्टे मैंने तुम्हें ग़लत समझ लिया और तुम्हारी बैलगाडी के पहिये को तोड डाला।''

सुकर्म ने महेश व रतन को ढाढस बंधाया और कहा, ''देखा, आवेश आदमी को कितना अंधा बना देता है। जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। शांत चित्त हो सोचना बिचारना चाहिए। तभी जाकर मालूम पडता है कि क्या ठीक है और क्या ठीक नहीं है। मानव जन्म उत्तम जन्म है। यह सीमित भी है। इस सीमित जीवन में मनुष्य को चाहिए कि वह प्रेमपूर्वक व्यवहार करे। सच कहता हूँ, सुनो। मैंने ऐसा कोई सपना देखा ही नहीं। दुर्भाग्यवश जो यह घटना घटी, उसे देखते हुए मुझे लगा कि ऐसा कहने पर तुम दोनों अपनी-अपनी गलतियाँ समझ जाओगे और शांत हो जाओगे। यह मेरी कल्पना मात्र थी।''

महेश और रतन ने साधु के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की। सुकर्म और उसके शिष्य ने उस दिन दोनों का आतिथ्य स्वीकार किया और दूसरे दिन पर्यटन करने वहाँ से निकल पडे।

माया सरोवर

6

(मगर के सिर का आकारवाला जब चरकाचारी के पास आया तो उसने उसे ज़ोर से पकड लिया और उसके वाहन जलग्रह पर चढ़कर बैठ गया। जयशील एवं सिद्धसाधक हिरण्यपुर की ओर बढते हुए जाने लगे। एक वृक्ष पर बैठे भील भीम ने मगर के सिर के आकारवाले पर बाण चलाया। जलग्रह ने उस वृक्ष को जड़ सहित उखाड दिया, जिसपर भील भीम बैठा हुआ था। - इसके बाद)

भील भीम प्राण-भय के मारे चिल्लाये जा रहा था। वृक्ष के साथ-साथ वह भी धड़ाम् से ज़मीन पर आ गिरा। जयशील ने मगर के आकारवाले मकरकेतु के कंधे को ज़ोर से हिलाते हुए पूछा, ''अरे दुष्ट, मेरी अनुमति के बिना तुमने जलग्रह को वृक्ष गिराने के लिए क्यों उकसाया?''

मकरकेतु ने पीडा के मारे कराहते हुए कहा, ''जयशील, मैं भीम को ज़मीन पर नहीं गिरा देता तो वह एक और बाण चलाता और मुझे मार डालता। उसे गिराने के अलावा मेरे पास कोई दूसरा चारा नहीं था।''

इतने में सिद्धसाधक जलग्रह पर से नीचे कूद पडा और पेड की शाखाओं में फंसे भीम को बाहर खींचते हुए कहा, ''अरे मूर्ख, देखो, कहीं हाथ-पाँव टूट तो नहीं गये?''

बीच बाण चला दूँ।'' कहते हुए उसने धनुष उठाया।

जयशील ने झट उसके हाथों से धनुष और बाण खींच लिये और उन्हें फेंक दिया। ठीक उसी समय वहाँ चरकाचारी व बीर आ पहुँचे। चरकाचारी, मकरकेतु को देखकर चकित रह गया। वह बोला, ''यह क्या? पेट में चुभी तलवार के साथ-साथ कंधे के अंदर घुसा यह बाण भी! लगता है, इसके बुरे दिन आ गये!''

''छी, यह भी कोई ज़िन्दगी है। इन अधम मानवों द्वारा मेरा यह अपमान! अच्छा यही है कि मैं मर जाऊँ। कहाँ है, मेरा शूल?'' कहते हुए मकरकेतु जलग्रह पर शूल ढूँढ़ने लगा।

अपने हाथ में पड़े शूल को ऊपर उठाते हुए सिद्धसाधक ने कहा, ''यह रहा तुम्हारा शूल। इसे मैंने अपना बना लिया है।''

इसके बाद जयशील और सिद्धसाधक फिर से हाथी पर बैठकर कहने लगे, ''मकरकेतु, डरने की कोई बात नहीं। किसी भी हालत में हम तुम्हें नहीं मारेंगे और मरने नहीं देंगे। तुम्हें पास ही के गाँव में ले जायेंगे और तुम्हारी चिकित्सा करायेंगे। घाव जब भर जायेंगे तभी हम तुम्हें हिरण्यपुर के राजा के पास ले जायेंगे। हमारा विश्वास करो।''

मकरकेतु ने दोनों हाथ उठाकर कहा, ''सब माया सरोवरेश्वर की दया है। कोई और अधम भील बीच रास्ते में मुझपर बाण न चलाये, बस, इसका ख्याल रखना। मेरे प्राणों पर कोई

भीम ने छलांग मारते हुए कहा, ''भूतों के मालिक, मैं बिलकुल ठीक हूँ। मुझे कोई चोट नहीं आयी। परन्तु दुःख है कि मेरा निशाना चूक गया और वह दुष्ट बच गया परन्तु इस बार तो मेरा निशाना नहीं चूकेगा और मेरा बाण हाथी पर बैठे उस पिशाच का अंत करके ही रहेगा।'' यह कहता हुआ बड़े ही उत्साह के साथ उसने धनुष हाथ में ले लिया।

जयशील तेज़ी से हाथी से कूदा और भीम की गरदन पकड़ते हुए कहा, ''तुम्हारी समझ में यह नहीं आया कि तुम्हारे बाण का निशाना चूक सकता है और वह मुझे लग सकता है?'' क्रोध-भरे स्वर में उसने पूछा।

''मालिक, मेरा बाण अचूक है। अगर मैं चाहूँ तो उस मगरवाले की आँखों के बीचों-

विपत्ति न आये, इसकी जिम्मेदारी तुम दोनों पर है।''

''हम तुम्हें हर हालत में बचायेंगे। हमपर विश्वास रखो। अब अपने जलग्रह को आगे बढ़ाओ।'' जयशील ने कहा।

जलग्रह वहाँ से आगे बढ़ा पर थोड़ी दूर तक गया भी नहीं था कि इतने में पेड़ों पर डफलियाँ व सीटियाँ बजने लगीं। दूसरे ही क्षण भीलों का भूतनाथ व दस-बारह भील युवक पेड़ों से उतर आये। सबके हाथों में हथियार थे।

भील भूतनाथ उछलता-कूदता हुआ कहने लगा, ''बलि! बलि! मैं महंकाली हूँ। मगरवाले का कंठ नोच डालूँगा और उसके रक्त से अपने पैरों को धोऊँगा। अगर ऐसा नहीं हुआ तो भीलों के कुल का नाश कर डालूँगा।''

जलग्रह के पीछे खड़ा भीम, ''माँ काली!'' कहकर चिल्ला उठा। फिर सिद्धसाधक से कहने लगा, ''ऐ राजा के भूतों के मालिक, हमारे गणाचारी पर हमारी कुलदेवी महंकाली हावी हो गयी है। माँ इस मगरवाले का रक्त चाहती है। उसे हाथी पर से नीचे धकेल दीजिए। इसके बाद हमारे भूतनाथ गणाचारी इसकी खबर लेंगे।''

जयशील की समझ में आ गया कि भीम पर भी महंकाली हावी हो रही है। वह भी नशे में आ रहा है और किसी भी क्षण कुछ भी हो सकता है। तब जयशील ने मकरकेतु के कान में धीरे से कुछ कहा।

तत्क्षण ही मकरकेतु ने अपने जलग्रह को संबोधित करते हुए कहा, ''जलग्रह, इस अधम भील को अपनी सूंड में लपेट लो और ऊपर उठाओ।''

जलग्रह ने तुरंत अपनी सूंड से भीम की क़मर पकड़ ली और ऊपर उठाया। भीम छटपटाता हुआ बोला, ''जयशील प्रभु, महंकाली मगरवाले का रक्त चाहती है और आप इसे रोक रहे हैं। क्या आप जानते नहीं कि इससे महंकाली क्रोधित हो जायेगी और बड़ा अनर्थ हो जायेगा?''

जयशील जलग्रह पर से झुका और भीम की पीठ से तलवार को सटाते हुए कहा, ''अपने लोगों से कहो कि वे वापस लौट जाएँ।''

भीम ने भय के मारे छटपटाते हुए कहा,

की ओर बढ़ने लगा।

जयशील तब जलग्रह से नीचे कूदा और गणाचारी के बाल पकड़ लिये। उसने उसे धमकाते हुए कहा, ''झूठे कहीं के, अब सच बता। क्या सचमुच महंकाली तुमपर हावी हो गयी? मैं जानता हूँ शराब के नशे में आकर तुम ऐसा बक रहे हो, नाटक कर रहे हो।''

''महंकाली, मेरी रक्षा करो, मेरी रक्षा करो।'' कहकर गणाचारी चिल्लाने लगा। इतने में दस घुड़सवार वहाँ पहुँच गये और सबको घेर लिया।

जयशील ने पहचान लिया कि ये घुड़सवार राजा की सेना के ही हैं। उसने उनसे कहा, ''देखो, हाथी पर सवार मगर के सिर का आकारवाला राजा का क़ैदी है। देखना, वह भाग न जाए।''

घुड़सवारों का सरदार मकरकेतु को और जलग्रह को देखकर आश्चर्य में पड़ गया। वह क्षण भर के लिए स्तंभित रह गया। फिर बोला, ''यह आख़िर है कौन? राक्षस है या कोई पिशाच?''

''दोनों में से वह कोई नहीं। यह कहना भी मुश्किल है कि वह किस जाति का है?'' जयशील ने कहा।

इतने में सिद्धसाधक गणाचारी को पकड़कर दूर ले गया और धनुष-बाण लिये आक्रमण करने के लिए तैयार खडे भीलों से कहा, ''यह सचमुच काली माँ का भक्त नहीं

''प्रभु, तलवार मेरी पीठ में चुभोना मत। आपकी तलवार काफ़ी पैनी लगती है।''

''अरे भीम, मैंने तुमसे क्या कहा और तुम कर क्या रहे हो?'' तलवार को उसकी पीठ में थोडा और ज़ोर से चुभोते हुए जयशील ने कहा।

भीम ने तुरंत जलग्रह पर टूट पड़ने के लिए तैयार भीलों से कहा, ''अरे मोटे मामा, अरे ओ नाटे चाचा, हमला मत करो। सावधान। मगर सिरवाला राजा का आदमी है।''

''तो इसके रक्त से मेरे पैरों को धोने की मेरी प्रतिज्ञा का क्या होगा? मैं शांत नहीं रहूँगा। मैं काली हूँ, महंकाली हूँ। मैं उस पिशाच की बलि लेकर ही रहूँगा। बलि ! बलि ! पिशाच की बलि !'' कहता हुआ गणाचारी जलग्रह

है। कपटी है। इसपर बाण चलाओ और इसकी छाती को छलनी कर दो।''

यह सुनते ही गणाचारी भय के मारे थरथर काँपने लगा और तभी वहाँ पहुँचे जयशील से कहने लगा, ''प्रभु, इन सीधे-सादे भीलों से मुझे बचाइये। नहीं तो अपने बाणों से ये मेरे शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर देंगे।''

भील उसपर बाणों की वर्षा करने ही वाले थे, जयशील ने उन्हें सावधान करते हुए कहा, ''रुक जाओ। इसे मारो मत।'' फिर उसने सिद्धसाधक से कहा, ''यह क्या कर रहे हो तुम? मौत की सज़ा सुनाने के लिए क्या तुम कोई राजा हो?''

घुडसवारों की समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर बात क्या है, तो उन्होंने जयशील से पूछा, ''क्या आप ही जयशील हैं? पास ही के पहाड़ी तालाब के पास मंत्री आराम कर रहे हैं। आप ही को ढूँढ़ते हुए हम इस जंगल में आये।''

''सरदार, अच्छा किया आपने। मैं सिद्धसाधक हूँ। मैं और जयशील युवराज और युवरानी के अपहरणकर्ताओं को ढूँढ़ते हुए यहाँ आये। इसी विचित्र मुखवाले ने उनका अपहरण किया। जंगल भर में घूमकर हमने इसे अपने वश में कर लिया है।''

सरदार ने मकरकेतु को ध्यान से देखते हुए कहा, ''यह विचित्र तो लगता ही है, साथ ही बड़ा भयंकर भी दिख रहा है। इसके पेट में तलवार चुभी है और कंधे पर बाण चुभा हुआ है। इसने तो इन दोनों को आभूषण की तरह पहन रखा है। बड़ा ही विचित्र दृश्य है।''
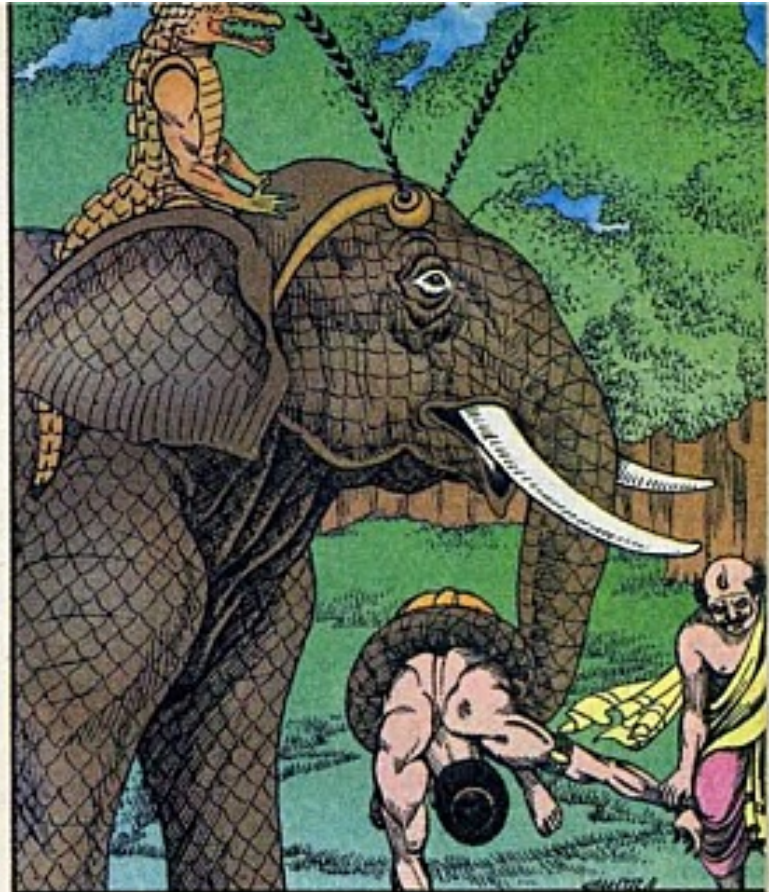
''ये आभूषण नहीं हैं। उसका प्राण हरनेवाले यम पाश हैं,'' जलग्रह के पीछे से आगे आते हुए बीर ने कहा।

जयशील को लगा कि यहाँ और समय बिताना बेकार है। उसने मकरकेतु से कहा, ''तुम अपनी रक्षा के बारे में निश्चिंत हो जाओ। कनकाक्ष राजा ने स्वयं ही अपने मंत्री को भेजा है। चलो, आगे बढ़ते हैं।''

भीम ने भूतनाथ गणाचारी को तीक्ष्ण दृष्टि से देखा और पास ही खडे घुड़सवार के हाथ से भाला खींच लिया और ऊँचे स्वर में चिल्लाने लगा, ''मेरा मुर्गा कहाँ है? अरे गणाचारी,

तुमने उसे कहाँ छिपा रखा?'' चिल्लाता हुआ वह भाला लिये गणाचारी पर टूट पड़ा।

गणाचारी भय के मारे चिल्ला उठा, ''इस पर भूत सवार हो गया है। अब यहाँ रहना खतरा मोल लेना है। भागो, भागो।'' कहता हुआ वह पीछे मुड़कर भागने लगा। बाकी भील भी उसके पीछे-पीछे भागने लगे। भीम भी भाला लिये उसके पीछे दौड़ने लगा।

''बच गये जयशील, बच गये। इन भीलों की बला टल गयी,''कहता हुआ सिद्धसाधक ज़ोर से हँस पड़ा।

यह सबकुछ आश्चर्य भरी आँखों से देखते हुए सरदार ने जयशील से कहा, ''महोदय, अब हम चलें?''
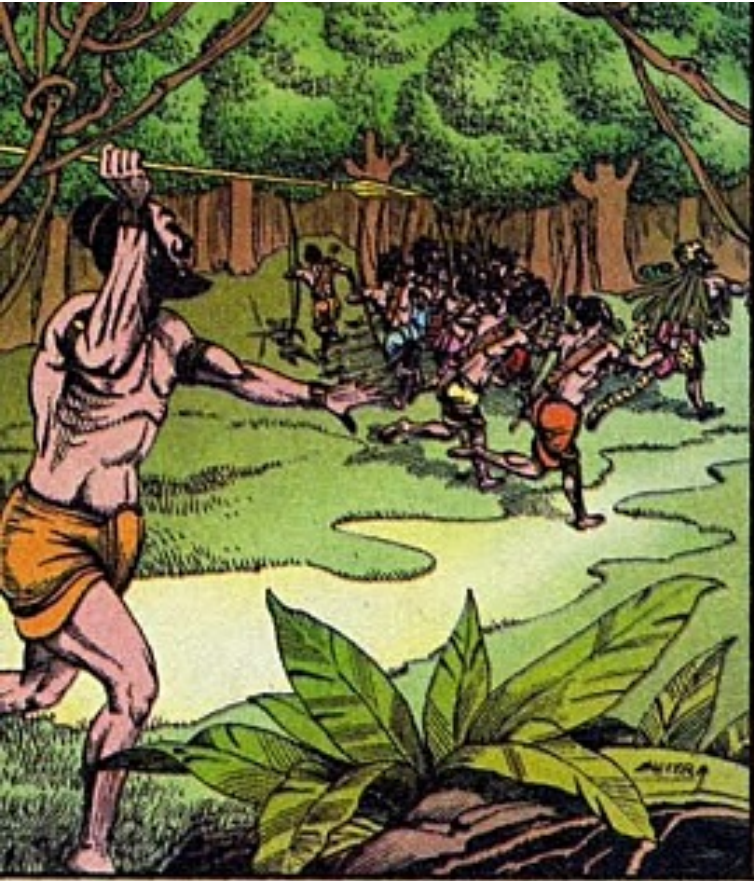
जयशील ने चरकाचारी व वीर को अपने पास बुलाया और उनसे कहा, ''आगे-आगे जाइये और रास्ता दिखाइये। मंत्री जी आप ही के गाँव के पास ठहरे हुए हैं।''

''मंत्रीजी के आने से हमारा गाँव मशहूर हो जायेगा। मकरकेतु की हम वहीं शस्त्र-चिकित्सा करेंगे और उनकी प्रशंसा भी पायेंगे। हम साबित कर देंगे कि हम कितने दक्ष शस्त्र-चिकित्सक हैं,'' चरकाचारी ने कहा।

''हाँ, तुमने ठीक कहा चरकाचारी। इस सफलता से राजा के दरबार में हमें पद मिलेंगे और हम राजवैद्य बन जाएँगे। ठीक कहा न मैंने?'' अपने आप खुश होते हुए वीर ने कहा।

''मैं तो नहीं जानता कि तुम दोनों राजवैद्य बनोगे कि नहीं, पर इतना तो निश्चित है कि अगर तुमने मकरकेतु को नहीं बचाया तो मंत्रीजी वहीं के वहीं तुम दोनों के सिर को धड़ से अलग करवा देंगे,'' जयशील ने कहा।

यह सुनकर सिद्धसाधक आवेश में आ गया और कहने लगा, ''यह काम मंत्री जी मुझे सौंपेंगे तो मंत्रोच्चारण के साथ महाकाल पर इनकी बलि चढ़ा दूँगा। इससे हमारा ही नहीं, लोक का भी कल्याण होगा।''

सिद्ध साधक की बातों पर जयशील ने मुस्कुराकर कहा, ''अब बातें करना बंद कीजिए और निकल पड़िये।''

आधे घंटे के अंदर वे सबके सब मंत्री के डेरे पर पहुँचे। मंत्री धर्ममित्र ने सबको एक बार देखा और जयशील से सादर कहा, ''राजा

की संतान का अपहरण करनेवाले को तुमने बंदी बना लिया, इसके लिए तुम्हें मेरी बधाइयाँ। लेकिन क्या यह भी पता चला कि इस दुष्ट ने उन्हें कहाँ छिपा रखा है?''

जयशील ने पूरा वृत्तांत मंत्री को सुनाने के बाद कहा, ''मंत्रिवर, अभी यह बहुत शारीरिक पीड़ा में है और मानसिक रूप से भी परेशान है। इसलिए मैंने इससे अपहरण के विषय में कोई पूछताछ नहीं की है। मार्ग के खतरों से इसे बचाता हुआ मैं अभी आपके पास ले आया हूँ। पहले इस मकरकेतु की शस्त्र-चिकित्सा कराकर उसके शरीर से यह टूटी तलवार और बाण निकालने होंगे। घाव भर जाएँ, तब इससे पूछताछ करना बेहतर होगा।''

मकरकेतु उनकी बातचीत ध्यान से सुन रहा था। उसने कहा, ''जयशील, जलग्रह प्यासा है। बहुत दिनों से इसने पानी नहीं पिया। पहले तालाब में उतारकर इसे पानी पिलाऊँगा और उसकी प्यास बुझाऊँगा।''

जयशील ने पहले सोचा कि हो सकता है यह इसकी कोई चाल हो। इसलिए वह नहीं चाहता था कि मकरकेतु एक क्षण के लिए भी उसके नियंत्रण से बाहर न जाये। फिर कुछ सोचकर उसने कहा, ''हाँ, ठीक है। परंतु मैं और सिद्धसाधक दोनों जलग्रह पर ही बैठे रहेंगे। हो सकता है, हमें तुम धोखा दो।'' फिर जयशील जलग्रह पर खड़ा हो गया। सिद्धसाधक भी तुरंत उसपर चढ़ गया और उसके बगल में ही खड़ा हो गया।

मकरकेतु ने सहलाकर जलग्रह को तालाब में उतारा और उसे काफी अंदर ले जाने के बाद कहा, ''जयशील, लगता है, मौत से मैं बच नहीं सकता। वह चाहे घावों के भरने के पहले हो या बाद।'' फिर एक क्षण के लिए वह चुप रहा और फिर अचानक चिल्ला पड़ा, ''हे मायासरोवरेश्वर! जलग्रह, डूबो और रास्ता दिखाओ।''

जलग्रह तुरंत जयशील, और सिद्धसाधक के साथ पानी में डूब गया।

- सशेष
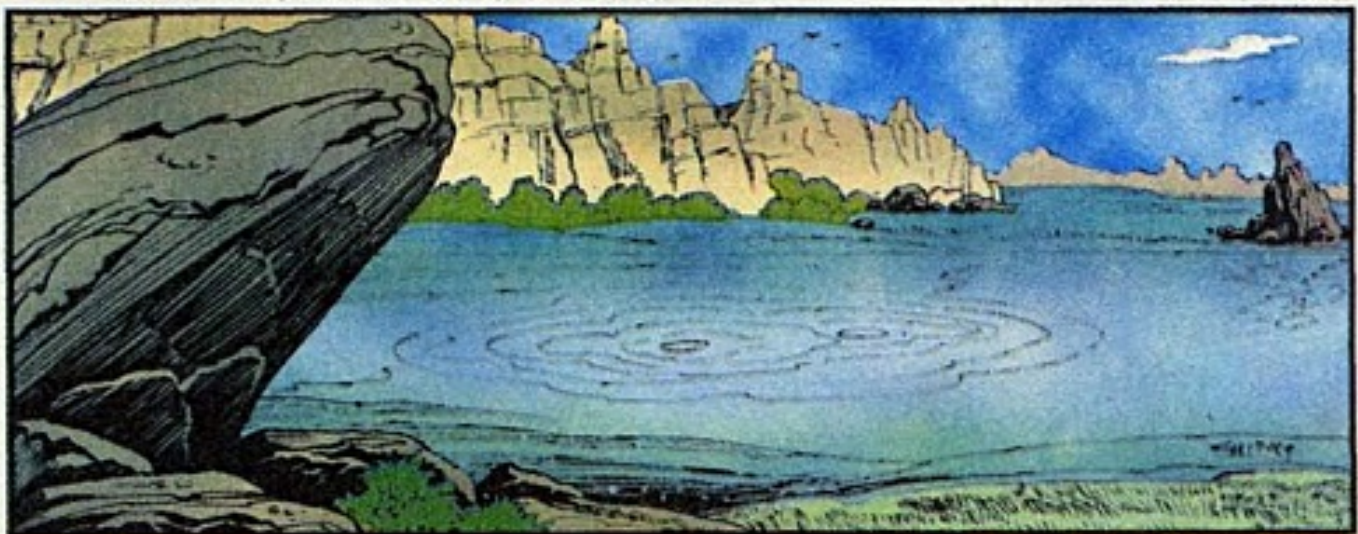
खास बात क्या है?

"पचास अक्से (पुरानी तुर्की अशर्फी) इस खूबसूरत चिड़िया के लिए! आओ, ले जाओ इस अनोखे परिन्दे को सिर्फ ५० अक्से में!" एक आदमी ने अलसहिर के बाजार में बोली लगाई। तभी होडजा अपने गधे पर बाजार में घूम रहा था। उस विचित्र चिड़िया को देखने के लिए बहुत बड़ी भीड़ एकत्र हो गई थी।

नसीरुद्दीन होडजा चिड़िया को एक नजर देखने के लिए भीड़ को हटा कर उस आदमी के पास पहुँचा जो चिड़िया को बेचने की कोशिश कर रहा था। होडजा को वह परिन्दा बहुत मामूली लगा, इसलिए उसे आश्चर्य हुआ कि क्यों वह आदमी उसके लिए ५० अक्से माँग रहा है जबकि दूसरी दूकान पर ५ अक्से में एक चूजा मिल रहा है।

"मेरे साथी !" उसने चिड़िया-विक्रेता से कहा, "इस चिड़िया की खासियत क्या है जिसके लिए तुम ५० अक्से माँग रहे हो?"

"इफेन्दी," चिड़िया-विक्रेता ने कहा, "यह मामूली परिन्दा नहीं है जो अलसहिर के कोने-कोने में मिल जाये। यह तोता है और यह विशेष प्रकार का है।"

"इसमें क्या खास बात है?" यह देखने में अन्य मामूली चिड़ियों की तरह है।" होडजा ने कहा।

"इफेन्दी, इस चिड़िया को तोता कहते हैं और यह बोल सकता है।" चिड़िया विक्रेता ने कहा।

होडजा को अचानक एक विचार सूझा। वह घर चला गया, दरबे से अपनी टर्की निकाली और वापस बाजार आ गया। वह तोता विक्रेता के निकट बैठकर चिल्लाकर बोली लगाने लगा : "आओ, सिर्फ १०० अक्से में इस खूबसूरत चिड़िया को ले जाओ।"

दूसरा चिड़िया-विक्रेता काफी परेशान होकर बोला, "तुम्हारी चिड़िया में क्या विशेषता है? यह केवल मामूली सा टर्की है। इसके लिए सौ अक्से क्यों माँग रहे हो?"

"लेकिन तुम अपनी चिड़िया तो ५० अक्से में बेच रहे हो ! है न?" होडजा ने जबाब दिया।

"लेकिन मैंने कहा न कि मेरी चिड़िया बोल सकती है। तुम्हारी चिड़िया केवल भकोस सकती है।" भद्दी खीसें निपोरते हुए चिड़िया-विक्रेता ने कहा।

"आह !" होडजा ने कहा। "मेरी चिड़िया सोच सकती है।"

राजभक्ति

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव को उतारा और उसे अपने कंधे पर डाल यथावत् श्मशान की ओर बढ़ने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''राजन्, तुम्हारा आग्रह और पराक्रम प्रशंसनीय है। इसके लिए तुम्हारा अभिनंदन किये बिना नहीं रह सकता। जहाँ तुममें सद्गुण भरे पड़े हैं, वहीं तुममें चंद कमियाँ भी हैं। इन कमियों को न सुधारने पर तुम्हें अपार कष्ट पहुँचेगा। इस बात का मुझे दुख है कि जहाँ तुममें आग्रह है, वीरता है, प्रेम-भावना है, वहीं तुममें तर्क शक्ति का अभाव है। किसी भी विषय को तर्क की कसौटी पर कसना चाहिए। खरा उतरने

पर ही उस विषय को कार्य-रूप देना चाहिए। ऐसा न करने पर अनर्थ हो जायेगा। किसी की भलाई करने के बदले उसे कष्ट पहुँचाओगे। मुझे लगता है कि बीरदत्त की ही तरह तुममें सूक्ष्म परिशीलन का अभाव है। किसी भी विषय की तह में जाना बहुत ज़रूरी है। ऐसा न करने पर असलियत से अपरिचित ही रहोगे। अपने को सुधारने के लिए मैं तुम्हें मौक़ा देता हूँ। उस बीरदत्त की कहानी मैं तुम्हें सुनाने जा रहा हूँ। ध्यान से सुनो।'' फिर बेताल ने यों कहा :

बहुत पहले की बात है। केचूर देश में वीरदत्त नामक एक युवक रहा करता था। वह महान योद्धा था। सभी युद्ध विद्याओं में वह निपुण था। मल्ल युद्ध, धनुर्विद्या, गदा युद्ध आदि जैसी सभी क्षात्र विद्याओं में वह कुशल था। इनके अलावा शास्त्रों में भी वह पारंगत था।

केचूर राज्य के सेनाध्यक्ष की अकाल मृत्यु हो गयी। उस पद पर नियुक्त करने के लिए एक योग्य व्यक्ति की खोज होने लगी। इसी सिलसिले में नगर में एक प्रतिष्ठात्मक प्रतियोगिता का आयोजन हुआ।

वीरदत्त ने इस प्रतियोगिता में भाग लेने का निश्चय कर लिया। राज्य के इस अत्युत्तम पद को पाने की उसने ठान ली। जब उसके पिता को अपने बेटे की इच्छा मालूम हुई तब उसने बेटे वीरदत्त से कहा, ''पुत्र, राजा के यहाँ नौकरी करना खतरों को मोल लेना है। छोटी-सी भी ग़लती तुम्हारे जीवन के लिए ख़तरनाक साबित हो सकती है। साँप के फन की साया में तुम जीना क्यों चाहते हो? यहीं रहो और खेती करो। आराम से ज़िन्दगी काटो और निश्चिंत रहो।''

बीरदत्त को अपने पिता का हितबोध सही नहीं लगा। उसने अपनी असहमति जताते हुए कहा, ''मैंने इन विद्याओं को सीखने के लिए बड़ी मेहनत की। निस्संदेह मैं इन विद्याओं में निष्णात हूँ। ये तभी सार्थक साबित होंगी, जब मैं राजा के यहाँ उच्च पद पर नियुक्त होऊँगा।'' पिता ने उसे बहुत समझाया-बुझाया, पर वह अपने निर्णय पर डटा रहा और प्रतियोगिता में भाग लेने वह राजधानी निकल पड़ा।

उस प्रतियोगिता में भाग लेने कितने ही शूर-बीर वहाँ आये थे। प्रतियोगिता का पहला चरण था, शारीरिक बल और दृढ़ता, व्यायाम, योग विद्या, ज्ञान, देशीय क्षात्र विद्या नैपुण्य। इनमें अनायास ही वह जीत गया। इस प्रकार से प्रतियोगिता के अनेकों और चरण थे, जिनमें

उसने प्रतिद्वंद्वियों को हरा दिया और सबमें वह प्रथम आया।

इसके बाद उससे केचूर देश की भौगोलिक परिस्थितियों, पड़ोसी मित्र व शत्रु राज्यों के सेना-बलों व युद्ध तंत्रों में बरती जानेवाली नीतियों के बारे में अनेकों सवाल किये गये। वीरदत्त ने इन सब प्रश्नों का सही उत्तर दिया। अब वीरदत्त को लगा कि इस प्रतियोगिता में वही अव्वल चुना जायेगा और वह सेनाध्यक्ष पद के योग्य बनेगा। उसका यह विश्वास तब और पक्का हो गया जब उसके रहने का प्रबंध एक भव्य भवन में किया गया।

दूसरे ही दिन केचूर देश का महामंत्री त्रिनाथ स्वयं वीरदत्त से मिलने उस भवन में आया। पहले मंत्री ने उसकी वीरता व ज्ञान की भरपूर प्रशंसा की। फिर उससे कहा, ''हमें विश्वास हो गया है कि सेनाध्यक्ष बनने के लिए सभी आवश्यक योग्यताएँ तुममें भरी पड़ी हैं। देश की रक्षा में इस पद का अत्यधिक महत्व है। पर पदाधिकारी का पराक्रमी होना मात्र पर्याप्त नहीं है। इन परीक्षाओं में सफल होने मात्र से यह प्रमाणित नहीं हो जाता कि तुममें इस पद को संभालने की योग्यता है। इसलिए समयानुसार सहज परीक्षा भी तुम्हारी होगी और इसके लिए तुम्हें कुछ और दिनों तक इंतज़ार करना होगा। छः महीनों तक तुम राजा के दरबार में काम करोगे। तुम्हें जो काम सौंपे जायेंगे, उन्हें इस अवधि में पूरा करते रहोगे। फिर भी तुम पदाधिकारी कहलाये नहीं जाओगे। मैं आशा करता हूँ कि इसके बाद तुम सेनाध्यक्ष बनोगे।''

इसके बाद दो महीनों तक वीरदत्त को कोई काम सौंपा नहीं गया। एक दिन अकस्मात् त्रिनाथ

से बुलावा आया। वह मंत्री से मिलने गया।

त्रिनाथ ने वीरदत्त का सादर स्वागत किया और कहा, ''वीरदत्त, गुप्तचरों के प्रधान अधिकारी से अभी-अभी एक मुख्य समाचार मिला है। हमारे महाराज केचूरसिंह एक आदत के शिकार हैं। वे अनिवार्य रूप से महारानी के साथ हर दिन उद्यानवन में जाते हैं। उस समय उद्यानवन में उनके सिवा कोई नहीं होता। उनके अंगरक्षकों को भी वहाँ जाने की अनुमति नहीं दी जाती। शत्रु इस रहस्य को जान गये हैं और उन्होंने वहाँ उन्हें मार डालने की योजना बनायी है। आज से महाराज और महारानी की रक्षा का भार तुम्हें सौंपा जा रहा है। उस समय तुम उद्यानवन में रहोगे। पर ध्यान रखना कि तुम्हारी उपस्थिति के बारे में राजदंपति को बिल्कुल पता न चले। अगर उन्हें पता चल गया कि उन दोनों के अलावा कोई

और उस उद्यानवन में है तो तुम्हें कड़ी सज़ा दी जायेगी। सावधान रहना।''

बीरदत्त ने सहर्ष यह कार्य-भार अपने ऊपर ले लिया। उस दिन से उद्यानवन में वह राज दंपति के पीछे-पीछे ही घूमने-फिरने लगा। परंतु उसने हमेशा सावधानी बरती कि यह राज़ उन्हें मालूम न हो। यों चार दिन बीत गये। पाँचवें दिन हठात् पाँच दुष्ट राजदंपति पर टूट पड़े। केचूरसिंह उनका सामना करे, इसके पहले ही बीरदत्त तलवार लिये उनपर टूट पड़ा। दुष्ट भयभीत होकर भाग गये।

बीरदत्त ने राजदंपति को प्रणाम किया और उनसे बताया कि पिछले चार दिनों से वह उनकी कैसे रक्षा करता आ रहा है। यह सुनते ही केचूरसिंह ने उसे हिरासत में लेने का हुक़्म दिया।

उस दिन रात को महामंत्री त्रिनाथ बीरदत्त से मिलने जेल में आया। पूरा विवरण जानने के बाद सहानुभूति जताते हुए उसने बीरदत्त से कहा, ''बीरदत्त, कल तुम्हें दरबार में हाज़िर होना पड़ेगा। महाराज अवश्य तुम्हें कठोर दण्ड देकर ही रहेंगे। राजा का दरबार इसी प्रकार ख़तरों से भरा हुआ होता है। जो भी हो, तुमपर जो आपदा आई है, उसका कारक एक प्रकार से मैं हूँ। इसलिए मेरी सलाह है कि तुम यहाँ से भाग निकलो। इसके लिए आवश्यक प्रबंध भी मैं कर चुका हूँ। मैं महाराज को किसी प्रकार समझा-बुझा लूँगा।''

बीरदत्त ने क्षण भर सोचा और कहा, ''महामंत्री ने जो जिम्मेदारी मुझे सौंपी, मैंने उसे ठीक तरह से निभायी। इस बात की मुझे चिंता नहीं है कि महाराज मुझे कल क्या दंड देनेवाले हैं। मैं कहीं भी नहीं जाऊँगा क्योंकि मैंने कोई ग़लती नहीं की। आपके उदार स्वभाव के लिए अनेक धन्यवाद।''

यह सुनकर मंत्री मन ही मन हँस पड़ा और वीरदत्त का कंधा थपथपाते हुए वहाँ से चला गया।

बेताल ने कहानी सुनाने के बाद विक्रमार्क से कहा, ''राजन्, हो सकता है, वीरदत्त शूर-वीर हो, किन्तु साथ ही मुझे लगता है कि वह महामूर्ख भी है। पिता की बातों की अनसुनी करते हुए राज दरबार में नौकरी पाने की उसकी सोच ही मूर्खतापूर्ण है। महामंत्री की सलाह को भी उसने ठुकरा दिया और जेल में ही जाने का निश्चय कर लिया। जिस राजा की जान उसने बचायी, उसी राजा ने उसे क़ैद करवाया और जेल में ठूँस दिया। ऐसे कठोर व कृतघ्न राजा का उसने कैसे विश्वास कर लिया? वह दरबार में सुनवाई के लिए क्यों तैयार हो गया? उत्तर जानते हुए भी तुम चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने उसके संदेहों को दूर करने के लिए कहा, ''निस्संदेह वीरदत्त महावीर है। उसे मूर्ख समझना मूर्खता होगी। ऐसा व्यक्ति राजा के यहाँ काम करने के बिलकुल योग्य है। इसी कारण वीरदत्त ने सेनाध्यक्ष बनने के लिए प्रतियोगिता में भाग लिया। महामंत्री त्रिनाथ ने ठीक ही कहा कि पराक्रम व युद्ध तंत्र की जानकारी मात्र ही सेनाध्यक्ष बनने के मापदंड नहीं हैं। राजदंपति की रक्षा के लिए वह अकेले ही पाँच दुष्टों पर टूट पड़ा। राजदंपति की शांति में उसने खलल डाला, यह केवल थोपा गया बहाना मात्र है। वीरदत्त को जेल में बंद करना, दूसरे दिन की सुनवाई आदि राजा और मंत्री की केवल नीतियाँ हैं। उसकी राजभक्ति, देशभक्ति व कर्तव्यपरायणता को जानने के लिए ही उन्होंने ये रास्ते अपनाये। मंत्री ने उसे आश्वासन दिया कि जेल से भागने के लिए आवश्यक प्रबंध भी किये गये हैं, फिर भी वीरदत्त ने भाग जाने से इनकार कर दिया। इससे उसकी राजभक्ति साबित हो गयी। इसी कारण मंत्री मन ही मन हँस पड़ा और उसकी भुजा थपथपायी। इसका यह मतलब हुआ कि वीरदत्त सेनाध्यक्ष बनने की पूरी योग्यता रखता है और इस दिशा में की गयी सब परीक्षाओं में प्रथम आया है।''

राजा के मौन भंग में सफल बेताल शव सहित गायब हो गया और पुनः पेड़ पर जा बैठा।

(आधार - शैलजा व्यास की रचना)

भारत की पौराणिक कथाएँ - ३

कैसे वज्र अधिक शक्तिशाली बना?

देव और दानव आपस में बहुत लम्बे समय तक, वास्तव में हजारों वर्ष तक युद्ध करते रहे। कभी देव युद्ध में विजयी होते तो कभी उन्हें शत्रुओं द्वारा घोर पराजय मिलती। दोनों दलों के बीच हुए युद्धों की कुल संख्या का लेखा जोखा करें तो पता यह चलता है कि इन युद्धों में देवों की अपेक्षा दानवों को अधिक बार विजय मिली है।

दानवों में अनेक अत्यधिक दक्ष और प्रतिभाशाली थे। उन्हें अनेक कलाओं की जानकारी थी और विज्ञान के कई क्षेत्रों पर उनका पूर्ण अधिकार था। लेकिन उनकी समस्या थी उनका दंभ और अहंकार। अपने स्वार्थमय सुखों के लिए वे किसी हद तक निर्मम और क्रूर हो सकते थे। शान्ति, विनम्रता तथा ईश्वर-भक्ति जैसे जीवन के आदर्शों की उन्हें कतई परवाह नहीं थी। वास्तव में कुछेक अपवादों को छोड़कर, अन्य सब के सब उन सबसे घृणा करते थे जो शान्तिपूर्वक जीवन बिताना और भगवान का ध्यान करना चाहते थे। इसलिए स्वभावतः ऋषि-मुनि इनके अत्याचार का सबसे अधिक शिकार बनते थे।

देवता इनके शत्रु थे क्योंकि स्वर्ग पर उनका राज्य था। दानव केवल धरती ही नहीं, स्वर्ग पर भी अधिकार चाहते थे। वे कई बार

देवताओं के राजा इन्द्र को स्वर्ग से हटाने में सफल भी हो गये। फिर भी, इन्द्र ने विष्णु, शिव, ब्रह्मा - त्रिदेवों की सहायता से अपने पद और अधिकार को पुनः प्राप्त कर लिया।

एक बार वृत्रासुर नाम का दानव बहुत ही शक्तिशाली और महत्वाकांक्षी हो गया। वह अपने गिरोह के साथ प्रायः किसी न किसी बहाने से या अकारण देवताओं पर आक्रमण कर देता और उन्हें परास्त कर देता। उसे पराजित करने का इन्द्र का हर प्रयास व्यर्थ गया। दानव को यह वरदान प्राप्त था कि न वह अग्नि में जल सकता है और न जल में डूब सकता है, और न किसी प्रकार के धातु या काष्ठ का बना अस्त्र-शस्त्र उसे क्षतिग्रस्त कर सकता है।

इन्द्र वृत्रासुर के खतरे से उबरने के लिए उपाय के विषय में ऋषि-मुनियों से परामर्श करता रहा। अन्त में उसे पता चला कि यदि कोई ऋषि अपनी तपस्या के बल पर इन्द्र को हटाकर स्वर्ग का राजा बन जाये तो दानव की मृत्यु हो सकती है। ऐसे ऋषि को कहाँ ढूँढ़ा जाये? निस्सन्देह एक ऐसा ऋषि - एकमात्र ऐसा ऋषि था जो अपनी तपस्या के बल पर इंद्र पद पाने का अधिकार रखता था। वह दधीचि ऋषि था। लेकिन इन्द्र में उसके पास जाने का साहस न था क्योंकि उसने कभी ऋषि के तपोबल द्वारा स्वर्ग का राजा बन जाने के भय से त्रस्त होकर उसकी

तपस्या भंग करने की कोशिश की थी। अब इन्द्र उससे सहायता के लिए कैसे अनुरोध करे?

इन्द्र की यह उलझन देवताओं के बचाव के लिए ऋषि से अनुरोध के मार्ग में एक मात्र बाधा नहीं थी। जिस उपाय से ऋषि उनकी रक्षा कर सकता था वह कुछ अनोखा ही था। वृत्रासुर को वध करने के लिए इन्द्र के वज्र का असाधारण रूप से शक्तिशाली होना आवश्यक था। और यह तभी हो सकता था जब उसमें महान ऋषि दधीचि की अस्थियाँ निहित हों। इसका अर्थ यह था कि देवों के लिए ऋषि अपने प्राण त्याग दें ताकि उनकी अस्थियों को इन्द्र के वज्र में अंतर्निहित किया जा सके।

इन्द्र को विश्वास था कि ऋषि इस प्रस्ताव को हँसी में टाल देगा। आखिर वह इन्द्र की सहायता क्यों करेगा जिसने उसके आध्यात्मिक खोज में अड़चन डालने की चेष्टा की।

इन्द्र चिन्ताग्रस्त और किंकर्त्तव्यविमूढ़ था।

इस बीच दानव ऋषियों और देवों पर विनाश ढाता रहा। यद्यपि दधीचि ने अपने आपको हर चीज़ से अलग-थलग रखा था, फिर भी धीरे-धीरे उसे दानव के अत्याचारों की खबर मिल गई। उन्हें यह भी मालूम हुआ कि केवल इसी उपाय से खतरे का सामना किया जा सकता है। उन्हें क्षण भर के लिए भी हिचक नहीं हुई।

उन्होंने ऋषियों और देवों को एक यज्ञ आयोजित करने का आदेश दिया। यज्ञ आयोजित होने पर ऋषि ने गहरी समाधि में जाकर देह-त्याग कर दिया।

देवों ने इन्द्र के वज्र को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए ऋषि की अस्थियों का उपयोग किया। और जब देवों और दानवों में पुनः युद्ध हुआ तब इन्द्र के वज्र ने आसानी से दानव का वध कर दिया।

इस प्रकार महान ऋषि ने एक महान उद्देश्य के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान कर दिया। इन्द्र के प्रति उनमें कोई दुर्भावना नहीं थी, यद्यपि उन्हें अतीत में इन्द्र से सद्व्यवहार नहीं मिला था। लेकिन उन्हें मालूम था कि देवों और मानवों की सुरक्षा के लिए दानव का वध आवश्यक है। उन्होंने तपस्या द्वारा अपने शरीर को शुद्ध कर लिया था। उनमें रत्ती भर भी स्वार्थ नहीं था। इसीलिए उनकी अस्थियाँ इतनी शक्तिशाली बन गईं। वे उदार भावना और मंगल कामना के ज्वलंत प्रतीक बन गये।

- बिन्दुसार

रहस्य सम्मान

कार्तिक एक सुखी सम्पन्न गृहस्थ था। किन्तु उसमें प्रसिद्धि की चाह थी। वह एक महान कलाकार के रूप में प्रतिष्ठा पाना चाहता था। परन्तु बहुत प्रयास के बाद भी वह ऐसा करने में सफल नहीं हुआ। तब उसकी पत्नी ने उसे सलाह दी, ''कला की सहज प्रवृत्ति आप में नहीं है, इसलिए आप कलाकार नहीं बन सकते। लेकिन कलाकारों का सम्मान करने से कलाकारों से भी अधिक आपका नाम होगा।''

पत्नी की सलाह कार्तिक को सही लगी। पहले पहल वह कलाकार नटराज से मिला। वे देश भर में प्रसिद्ध कलाकार थे। उनसे उसने अपना उद्देश्य बताया।

कार्तिक के उद्देश्य की प्रशंसा करते हुए नटराज ने कहा, ''मुझे आपके विचार अच्छे लगे। परंतु हाँ, इस संदर्भ में मैं एक बात कहना चाहूँगा। जब मेरा सम्मान किया जाएगा तब वे लोग उस सभा में अवश्य हों, जो मेरे बड़प्पन को जानते हों। मंच पर उन्हें यह स्पष्ट करना होगा कि मेरे सम्मान का क्या कारण है और मैं क्यों सम्मानित हो रहा हूँ।''

''महोदय, आपका नाम सुनते ही मुझे लगा कि आप इस सम्मान के सर्वथा योग्य हैं। देश भर में आपकी ख्याति है। ऐसी हालत में दूसरों की मान्यता की क्या ज़रूरत है ? मैं स्वयं आपका सम्मान करूँगा।'' कार्तिक ने कहा।

कलाकार नटराज ने इसपर अपनी असहमति व्यक्त करते हुए कहा, ''आपको नृत्य के बारे में कुछ भी मालूम नहीं है। अतः आप मेरा सम्मान करने की योग्यता नहीं रखते। जो मुझे इस सम्मान के लिए चुनते हैं, यह आवश्यक है कि वे नाट्याचारी
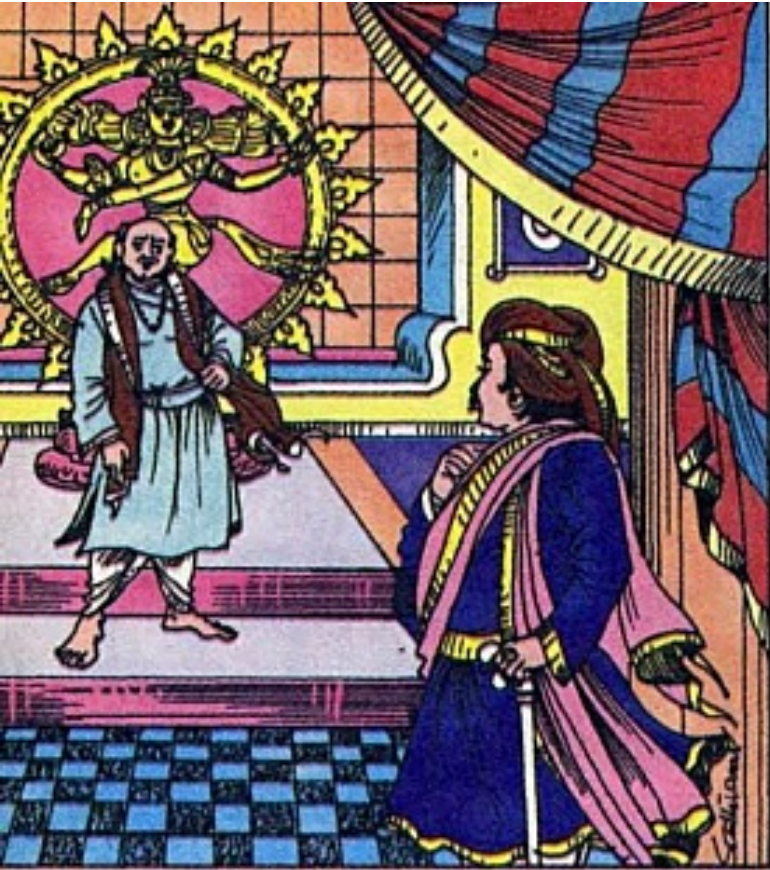
हों और वे इस विद्या में गुरु हों। पहले आप निर्णायकों से सलाह मशविरा कीजिए। उनके निर्णय को कोई भी नृत्य कला प्रेमी सहर्ष स्वीकार करेगा।'' कार्तिक नाट्य-शास्त्र के गुरु शंकर से मिला और उन्हें विषय बताया। तब उन्होंने कहा, ''कोई भी निर्णय अकेला नहीं ले सकता और यह न्यायोचित भी नहीं है। मैं और दो गुरुओं का नाम बताऊँगा। हम सब एकमत हो निर्णय करेंगे कि इस साल का प्रमुख नर्तक कौन हो।''

कार्तिक ने निराशा-भरे स्वर में कहा, ''महोदय, मैंने नटराज के सम्मान का निर्णय ले लिया है। आपको केवल 'हाँ' भर कहना होगा।''

''हम नाट्य गुरु हैं। जिसे हम चुनते हैं, उसी का सम्मान तुम्हें करना चाहिए। तुम्हारे निर्णय को हम कदापि स्वीकार नहीं करेंगे,'' गुरु शंकर ने गंभीर स्वर में कहा। हताश कार्तिक ने यह बात अपनी पत्नी से बतायी। उसने तुरंत कहा, ''न्यायनिर्णायक कोई और हों तो भी उस कलाकार को चुनने का हक़ आप ही को है।''

कार्तिक को फिर से पत्नी की बातें सही लगीं। फिर उसने उन कलाकारों को ढूँढ़ना शुरू किया, जिनका सम्मान किया जाएगा। मुश्किल से उसे चार कलाकार मिले। वे थे - एक कवि, एक चित्रकार, एक नर्तक व एक गायक। ये सभी के सभी अपनी-अपनी विद्या में साधारण श्रेणी के कलाकार थे।

''आपके सम्मान से हम पहचाने जायेंगे,'' चारों ने बताया। कार्तिक उन चारों को अपने घर ले आया। उसके पूरे परिवार ने कलाकारों के सामर्थ्य को बड़ी आसानी से जान लिया। अब वे इस सोच में पड़ गये कि इनका सम्मान कैसे हो और क्या किया जाए। उन्हें एक उपाय सूझा। कार्तिक से वे पहले ही बता चुके कि वे क्या करनेवाले हैं। और कोई उपाय न पाकर उसने परिवार के सदस्यों की बात मान ली।

तब कार्तिक की पत्नी ने उन चारों कलाकारों से कहा, ''देखिए, मेरे पति देव संकोची हैं। उन्हें इस बात का भय है कि इस सम्मान से उनकी ख्याति होगी। वे नहीं चाहते कि इससे उनका नाम हो, और समाज में उनकी प्रतिष्ठा बढ़े। इसलिए इस सम्मान में आप में से हरेक को एक सौ एक अशर्फ़ियाँ दी जायेंगी। परंतु किसी की जानकारी के बिना रहस्यपूर्वक यह सम्मान हो तो हरेक को एक हज़ार एक सौ अशर्फ़ियाँ दी जायेंगी। आप

स्वयं निर्णय कीजिए कि इनमें से कौनसा सम्मान आप पसंद करते हैं?''

एक हज़ार एक सौ अशर्फ़ियाँ लेने का ही उन्होंने निर्णय किया। उन चारों ने कहा, ''सम्मान, सम्मान होता है। चाहे वह खुलेआम हो या रहस्यपूर्वक।'' कार्तिक ने उन चारों को निश्चित धन-राशि दे दी और भेज दिया। वे बेचारे धन्यवाद देते हुए वहाँ से चलते बने।

इस घटना के दो सप्ताह के बाद किसी ने आधी रात को कार्तिक के घर का दरवाज़ा खटखटाया। कार्तिक खुद गया और दरवाज़ा खोला। वह व्यक्ति कोई और नहीं स्वयं नटराज थे। कार्तिक उन्हें देखकर चकित रह गया।

अपने गले को साफ़ करते हुए नटराज ने धीमी आवाज़ में कहा, ''कितने ही लोग ऐसे हैं, जो मेरी नृत्य-कला की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं पर एक भी आदमी ऐसा नहीं, जो कष्टों में मुझे सहायता पहुँचाये। अभी मेरी आर्थिक स्थिति बहुत बिगड़ी हुई है। मुझे इस बात का भय था कि अपात्रों से सम्मान पाने से बदनाम हो जाऊँगा। मालूम हुआ कि आप कलाकारों का सम्मान रहस्यपूर्वक करते हैं। आप मेरे सम्मान की बात भी रहस्य ही बनाये रखें तो मैं आपसे सम्मान स्वीकार करने को सन्नद्ध हूँ, क्योंकि एक हज़ार एक सौ अशर्फ़ियाँ मेरे लिए बड़ी धनराशि है।''

तब कार्तिक ने उसके पैरों का स्पर्श करते हुए कहा, ''आपकी बातों से मुझे मेरे कर्तव्य का बोध हो गया। आगे से अपनी प्रसिद्धि के लिए दूसरों का सम्मान करना नहीं चाहूँगा। ज़रूरतमंद कलाकारों को भविष्य में यथासाध्य सहायता पहुँचाता रहूँगा।'' यों कहकर उसने नटराज को आवश्यक धन-राशि सहर्ष दे दी।
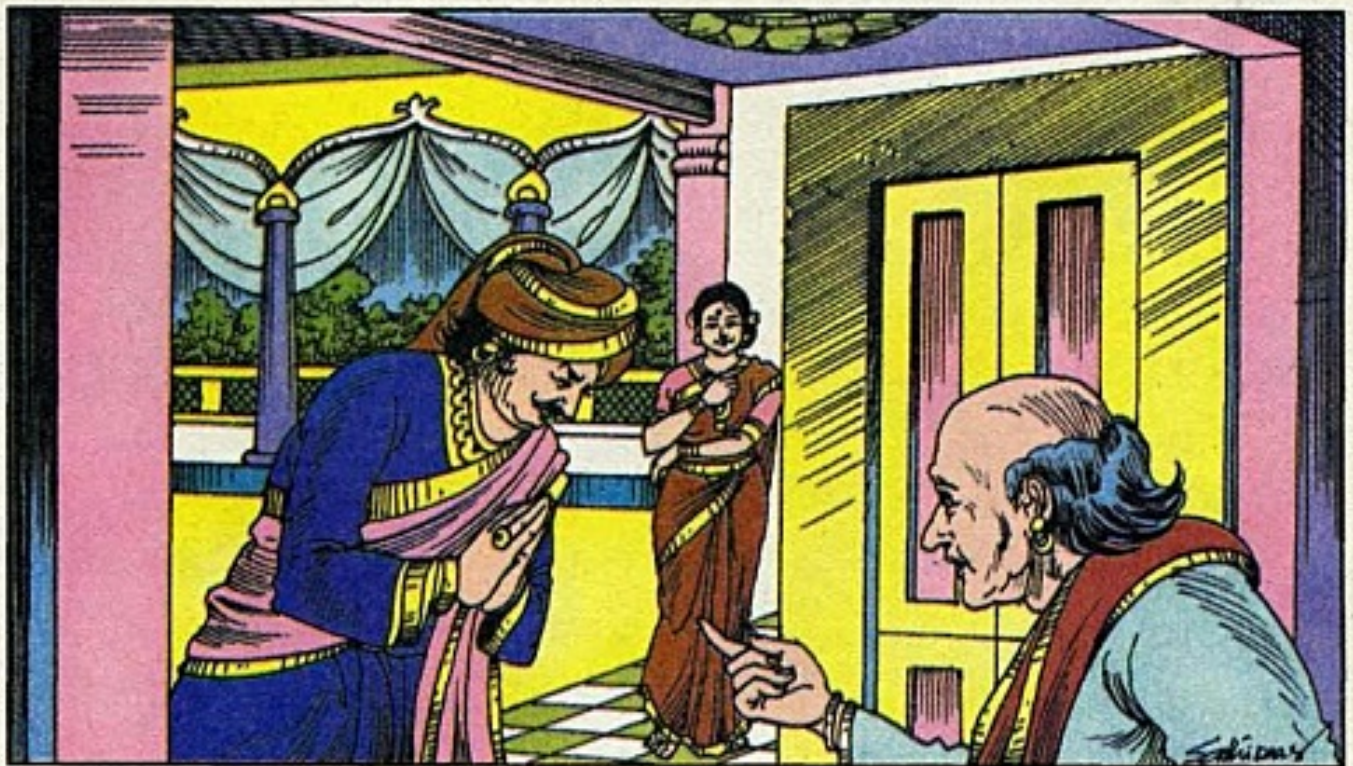
वाग्विदग्ध – तेनालीराम

श्रीकृष्णदेवराय एक दिन बहुत ही चिंतित थे। मंत्रियों ने उनकी उदासी का कारण पूछा, तब राजा ने दीर्घ श्वास लेते हुए कहा, ''मेरी माता ने अपनी अंतिम घड़ियों में आम माँगे। आमों की वह ऋतु नहीं थी, इसलिए मैं उनकी इच्छा पूरी नहीं कर सका। आम खाने की उनकी इच्छा पूरी नहीं हो पायी। इतना बड़ा राजा होते हुए भी माँ की इच्छा को पूरा करने में मैं विफल हो गया। इसका मुझे बड़ा दुख है।''

''प्रभु, आप इस बात को लेकर क्यों अनावश्यक चिंतित होते हैं। अब भी कुछ नहीं बिगड़ा। सोने के पाँच आम के फलों को पंडितों को दान में दीजिए। ऐसा करने से आपकी स्वर्गीय माँ की इच्छा पूरी होगी। उनकी आत्मा शांत होगी।'' पंडितों ने उपाय सुझाया।

उनकी बातों ने राजा के तप्त मन को शांत कर दिया। उन्हें आनंद हुआ। पंडितों ने माता की आत्मा को शांत करने के लिए जो उपाय सुझाये, वह उन्हें बिल्कुल सही लगा। पंडितों ने इसके लिए एक शुभ दिन भी निर्धारित किया। उस शुभ दिन पर सोने के पाँच आम पंडितों को दान में दिये गये। पंडितों ने उन्हें स्वीकार किया और राजा को आशीर्वाद दिया।

पास ही खड़े होकर तेनालीराम यह तमाशा देखते जा रहे थे। उनसे चुप रहा नहीं गया तो उन्होंने पंडितों से कहा, ''मेरी माँ भी एक इच्छा रखती थीं, पर वह इच्छा पूरी नहीं हो पायी। इसके पहले ही वे स्वर्ग सिधार गई। अगली अमावस्या के दिन हमारे घर आयें तो मैं भी आपको दान दूँगा और अपना कर्तव्य निभाऊँगा।

अमावस्या के दिन पंडित तेनालीराम के घर आये। तेनालीराम ने श्रद्धापूर्वक अपनी माँ को तर्पण दिया और पंडितों से एक-एक करके अंदर आने को कहा। उनके कहे अनुसार वे एक-एक करके ही गये, पर लौटते समय वे अपने एक हाथ को कपडे से छिपाते हुए बाहर आये। उनके चेहरे बडे ही गंभीर थे।

पंडितगण सीधे राजा के पास गये। तेनालीराम की शिकायत की और जले हुए अपने हाथ दिखाये। उन्होंने राजा से विनती की कि वे इस अपराध के लिए उसे कड़ी सी कड़ी सज़ा दें।

राजा ने तेनालीराम को बुलवाया। उनके आते ही राजा ने क्रोध-भरे स्वर में पूछा, ''पंडितों को आपने अपने यहाँ बुलाया। उन्हें दान देने का वचन दिया। उन्हें दान तो नहीं दिया, उल्टे उनके हाथों को सुलगती लकडी से जलाया। आपने ऐसा क्यों किया?''

''महाराज से क्षमा चाहता हूँ। मेरी माँ को खुजली से पूरे शरीर में जलन होती थी। 'जलन, जलन' कहती हुई वे मर गयीं। उनकी इच्छा पूरी नहीं कर सका पर आज पंडितों के द्वारा यह इच्छा पूरी कर ली। इनके हाथ जलाकर उनकी जलन दूर कर दी। आपके दान में दिये गये सोने के आमों से जब स्वर्ग में रहनेवाली आपकी माँ की इच्छा की पूर्ति हो सकती है तो क्या जलन से जली जा रही मेरी माँ की इच्छा पूरी नहीं होगी? उनकी आत्मा को अब शांति हो चुकी होगी।'' तेनालीराम ने कहा।

बताओ तो जानें

हमारे नियमित प्रश्नोत्तरी कालम को इस महीने से नये रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। इस प्रश्नोत्तरी के उत्तरों को एक पृष्ठ पर लिख लो और जब इनके उत्तर अगले अंक में छपें तो उनसे मिलाओ।

१. निम्नलिखित नदियों में से एक नदी की उपनदियाँ हैं - सलेरी, प्राणहिता और इन्द्रावती। किस नदी की ?

अ) कृष्णा आ) गोदावरी इ) कावेरी ई) साबरमती

२. पंजाब और हरयाणा की राजधानी एक है। चंडीगढ़ से पूर्व पंजाब की राजधानी कहाँ थी?

अ) जलन्धर आ) लुधियाना इ) अमृतसर ई) शिमला

३. स्वतंत्रता से पूर्व ब्रिटिश सरकार की ग्रीष्मकालीन राजधानी किस नगर में थी?

अ) श्रीनगर आ) शिमला इ) देहरादून ई) डलहौजी

४. भारत के राष्ट्रीय वृक्ष का नाम बताओ :

अ) नीम आ) आम इ) बोधि ई) वट वृक्ष

५. बाँस को किस कोटि में वर्गीकृत किया गया है?

अ) वृक्ष आ) लता इ) पर्णांग (फर्न) ई) घास

६. बटिक को क्या कहोगे?

अ) बुना हुआ वस्त्र आ) लघु चित्रकारी इ) रँगने की शैली ई) मूर्तिकला की शैली

७. बंगलोर को 'भारत की सिलिकन घाटी' के नाम से जाना जाता है। भारत का 'इस्पात नगर' किसे कहते हैं?

अ) सालेम आ) राउरकेला इ) जमशेदपुर ई) भिलाई

(उत्तर अगले महीने)

जून प्रश्नोत्तरी के उत्तर

१. अरावली
२. कावेरी
३. महानदी
४. केरल
५. गेटे
६. वेम्बानद
७. महाबालेश्वर
८. शरावती
९. नवल सागर
१०. बुन्देल
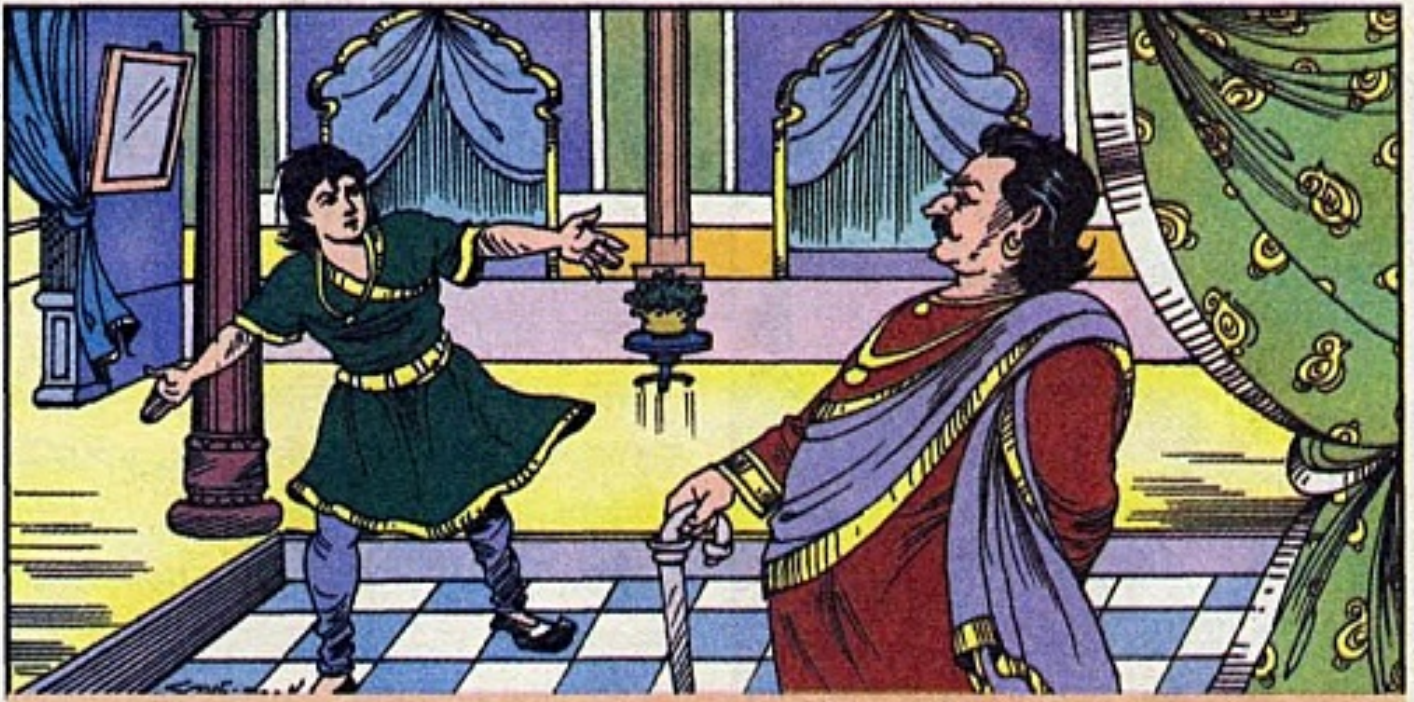
बाप बेटे की कहानी

बहुत पहले की बात है। एक बहुत बड़े नगर में सोमनाथ नामक एक सज्जन और संपन्न व्यक्ति रहा करता था। बड़ी प्रतीक्षा के बाद उनका एक बेटा हुआ। इसलिए माता-पिता ने उसे बड़े लाड़-प्यार से पाला। लाड़-प्यार में पलने के कारण उसकी बुद्धि में किसी प्रकार का विकास नहीं हुआ। वह क्रमशः अहंकारी होता गया।

सोमनाथ अपने बेटे के स्वभाव को ग़ौर से देख रहा था। उसकी उम्र अब शादी के लायक़ हो गयी। इसलिए सोमनाथ ने यह निश्चय किया कि उसे सही रास्ते पर लाने में देरी नहीं करनी चाहिए।

एक दिन सोमनाथ ने अपने बेटे से कहा, ''बेटे, अब तुम बड़े हो गये हो। किसी अच्छी लड़की से तुम्हारी शादी कर देने की मेरी इच्छा है। अब और देरी नहीं कर सकता। कोदंडपाणि व बलराम मेरे दो अच्छे दोस्त हैं। हालांकि इधर बहुत दिनों से उनका आना-जाना बंद है, पर एक-दूसरे के बारे में हम बराबर जानकारी रखते आ रहे हैं। वे दोनों भी कभी संपन्न थे। हाल ही में मालूम हुआ कि समय ने उनका साथ नहीं दिया, इसलिए अब उनकी स्थिति बड़ी ही दीन है। उनकी सारी संपत्ति छिन गयी। उन दोनों की एक-एक बेटी है, जो बालिग हैं। शादी करने की उनकी उम्र है। उन दोनों लड़कियों में से जो तुम्हें अच्छी लगे, उससे तुम्हें शादी करनी होगी। मैं उन्हें वचन दे चुका हूँ। हम अब दोनों मिलकर जायेंगे और उन दोनों लड़कियों से मिलकर आयेंगे। फिर उन दोनों में से जो लड़की तुम्हें अच्छी लगे, उससे तुम्हारी शादी होगी। मेरा बचन निभाना तुम्हारा फ़र्ज़ है।''

- कपिल शिखा -

कोदंडपाणि रहता था। उनके वहाँ पहुँचते-पहुँचते दुपहर हो गयी थी। कड़ी धूप थी। गाड़ी एक साधारण घर के सामने रुकी। गाड़ी से उतरकर सोमनाथ ने उस घर के मालिक को बुलाया और पूछा, ''कृपया बता सकते हैं, रामावतार कोदंडपाणि का घर कहाँ है?''

घर के मालिक ने सोमनाथ की वेष-भूषा को देखकर जान लिया कि यह कोई संपन्न व्यक्ति है। उसने बड़े आदर के साथ कहा, ''आप कोदंडपाणि से मिलने आये हैं?'' पर वह कुछ पूछते-पूछते रुक गया।

सोमनाथ ने यह भाँप लिया और कहा, ''उनसे नाता जोड़ने आया हूँ। गाड़ी में जो बैठा है, वही दुल्हा है और मेरा इकलौता बेटा है।''

यह सुनते ही घर के मालिक ने हर्ष प्रकट करते हुए कहा, ''तो आप कोदंडपाणि की पुत्री को देखने आये हैं? आइये, अंदर पधारिये।'' फिर बाप और बेटे को अपने घर के अंदर ले गया और उन्हें कुर्सियों में बिठाया। रसोई घर में जाकर नींबू का रस व नमक मिलायी हुई छाछ ले आया और उन्हें देते हुए कहा, ''पीजिए। धूप में आये हैं। यात्रा के कारण थक भी गये होंगे। यह ठंडी छाछ पीकर अपनी थकावट दूर कीजिए।''

इतने में घर के मालिक की बूढ़ी माँ आयी और सोमनाथ को नमस्कार करने के बाद कहने लगी, ''हम इस बात को जानने के लिए बहुत आतुर हैं कि वह भाग्यवान कौन है, जो कोदंडपाणि की बेटी लक्ष्मी से विवाह-बंधन में बंधनेवालाहै। लडकी सचमुच लक्ष्मीदेवी है। वह आपके घर में

परंतु बेटे ने पिता की बातों की गंभीरता को मानने से अस्वीकार कर दिया और कहा, ''आपने बहुत पहले जो वचन दिया, कोई ज़रूरी नहीं है कि हम उसे निभायें। ऐसे ऐरे-ग़ैरों से हम नाता जोड़ नहीं सकते। उनसे मिलने जाना एक व्यर्थ प्रयास है। अच्छा यही होगा कि हम उनसे मिलने न जाएँ।''

बेटे के इस रुख पर दुखी होते हुए सोमनाथ ने कहा, ''तुम यह क्या कह रहे हो? ऐसा करने पर क्या लोग यह नहीं कहेंगे कि मैं अपने वचन से मुकर गया। मुझपर यह कलंक लग जायेगा और मैं किसी को मुँह दिखाने लायक नहीं रह जाऊँगा।''

सोमनाथ के बेटे को पिता की बात माननी पड़ी और मजबूर होकर लडकियों को देखने जाने के लिए स्वीकृति देनी पड़ी।

दूसरे ही दिन सबेरे घोड़े की गाड़ी में बैठकर वे निकल पड़े। पहले वे चक्रधरपुर गये, जहाँ

क़दम रखेगी तो समझ लीजिए, लक्ष्मी सचमुच आपके घर में निवास करने आ गयी।''

सोमनाथ ने अपने लड़के की ओर देखा। वह देखना चाहता था कि उसके लड़के पर इन बातों का क्या प्रभाव पड़ा। यों बातों-बातों में आधा घंटा बीत गया तो घर के मालिक ने और उसकी माँ ने कहा, ''कोदंडपाणि के होनेवाले समधी हमारे भी रिश्तेदार हैं। आप यहीं भोजन करेंगे।'' फिर उन्होंने दोनों को भरपेट स्वादिष्ट भोजन खिलाया।

जब गाँव के लोगों को मालूम हुआ कि कोदंडपाणि की बेटी की शादी पक्की करने लोग आये हुए हैं तो वे उनसे मिलने आये। सोमनाथ और उसके बेटे को वे सादर कोदंडपाणि के घर ले गये।

कोदंडपाणि का घर छोटा था, पर बिल्कुल साफ-सुथरा था। अपने मित्र से मिलकर कोदंडपाणि बहुत खुश हुआ। यह जानकर उसे थोड़ा-सा दुख भी हुआ कि उनका अतिथि-सत्कार गाँववालों ने ही किया और उसे यह मौक़ा नहीं दिया गया। लक्ष्मी को देखने और उससे बातें करने के बाद उन्हें यह जानने में देर नहीं लगी कि वह बहुत सुंदर व अक़्लमंद है।

सोमनाथ वहाँ एक घंटा और ठहरा और फिर अपने बेटे को लेकर अनंतवर निकला, जहाँ बलराम रहता था। उस गाँव में पहुँचते-पहुँचते रात हो गयी थी। जिस तरह से उसने कोदंडपाणि के बारे में गाँववालों से जानकारी

प्राप्त की, उसी तरह से बलराम के बारे में भी जानकारी पाने का प्रयत्न किया।

बलराम का नाम सुनते ही एक ग्रामीण चिढ़ता हुआ बोला, "बलराम के घर के बारे में पूछ रहे हो? उस इंद्रभवन में पहुँचना हो तो तुम्हें बहुत-सी गलियों से गुज़रना होगा। मैं जान सकता हूँ, उस महानुभाव से आपका क्या काम है?" उसके स्वर में व्यंग्य भरा हुआ था। सोमनाथ का जवाब सुनते ही वह कहने लगा, "बाप रे, बलराम से नाता जोड़ना चाहते हैं? उसका समधी बनना चाहते हैं? जाइये, जाइये, आपका वहाँ बड़ा आदर-सत्कार होगा।" कहते हुए वह वहाँ से चलता बना।

सोमनाथ ने दो-तीन और लोगों से भी पूछा कि बलराम का घर कहाँ है, तो किसी ने सही जवाब नहीं दिया। किसी ने भी न ही पीने के लिए पानी दिया, न ही बलराम के घर का पता बताया। उल्टे वे उस पर कटु टिप्पणियाँ करने लगे।

आख़िर लंबी साँस खींचते हुए सोमनाथ गाड़ी में बैठ गया और अपने बेटे से कहा, "कोदंडपाणि शांत स्वभाव का है। विनम्र भी है। लखपति होते हुए भी लोगों से उसका व्यवहार बहुत ही अच्छा होता था। उसके इस सद्व्यवहार के कारण ही लोग आज भी उसका आदर करते हैं। उसकी इस दरिद्र स्थिति में भी वे उसकी इज़्ज़त करते हैं। वे सब चाहते हैं कि तुम्हारी शादी उसकी बेटी से हो। लक्ष्मी भी अपने पिता की ही तरह सौम्य है और है सद्गुण संपन्न। बलराम अहंकारी है। धन के गर्व में चूर होकर उसने अन्य लोगों के साथ दुर्व्यवहार किया। लोगों से उसका व्यवहार अच्छा होता तो अवश्य ही वे उसकी इस दीन स्थिति में मदद करने आगे आते। देखा, उसका घर दिखाने के लिए कोई भी ग्रामीण तैयार नहीं है! फिर भी यह जानने की कोशिश करें कि आख़िर उसका घर है कहाँ?"

इन बातों को सुन कर सोमनाथ का बेटा सोच में पड़ गया। उसने अपना निर्णय सुनाते हुए कहा, "नहीं पिताजी ! हमें बलराम के घर जाने की कोई ज़रूरत नहीं। मुझे कोदंडपाणि की बेटी अच्छी लगी।"

बेटे की बातों में नम्रता भरी हुई थी। लगता था कि वह समझ गया कि अच्छा क्या है और बुरा क्या है? अपने बेटे को परिपर्तित देखकर सोमनाथ बहुत खुश हुआ।

सभी चमकनेवाले...

क्या तुम जानते हो कि पुराने जमाने के राजाओं और रानियों को चमक-दमक कहाँ से मिली? यह कोई बुद्धि या ज्ञान की चमक नहीं थी। उन लोगों में भी उतने ही मन्द बुद्धि के नर-नारी थे जितने शेष हीनतर मानवों में। वास्तव में, वे चमकीले जेवरातों के कारण, जो वे धारण करते थे, भडकीले लगते थे।

यह भडकीलापन इन्हें चाणक्य नाम के एक बुद्धिमान व्यक्ति से मिला, जिन्हों ने ईसापूर्व तीसरी शताब्दी में अपनी कृति 'अर्थशास्त्र' में शासन-कला के नियम निर्धारित किये। उसने लिखा कि हरेक राजा को अपने राज्य की खनिज सम्पदा की जानकारी अवश्य होनी चाहिए और खानों के उत्पादों पर नियंत्रण रखना चाहिए। लगता है राजाओं ने उसके शब्दों को अपने हृदय में बसा लिया। उन्होंने ऐसा प्रबंध किया कि उनके राज्य की खानों से निकले सर्वोत्तम रत्न, खनिज, धातु शाही खजाने में ही जायें।

असम में झनक-झनक

नृत्य की बात चलते ही मन में जो पहले नाम आते हैं - वे हैं : भरतनाट्यम, ओडिसी, कुचीपुडि और कथकली। यहाँ एक और नाम है : सत्रिय। असम में प्रचलित इस नृत्य-नाट्य शैली को बहुत कम लोग जानते हैं। कहा जाता है कि राज्य के प्रसिद्ध वैष्णव संत शंकरदेव ने जो पन्द्रहवीं शताब्दी में हुए थे, इस नृत्य शैली की रचना की थी। पहले सत्रिय नृत्य केवल पुरुषों द्वारा किया जाता था। बाद में स्त्रियों ने भी इसे करना शुरू किया। कथकली के समान इस नृत्य नाट्य शैली को दृश्यों में विभाजित नहीं किया जाता बल्कि सूत्रधार की प्रभावशाली उपस्थिति द्वारा इसे एक सूत्रबद्ध रखा जाता है।

असम की एक लोक कथा

भारत के उत्तरपूर्वी राज्यों का द्वार असम 'लाल नदी और नीली पहाड़ियों के देश' के नाम से लोकप्रिय है। लाल नदी ब्रह्मपुत्र नदी की ओर संकेत करती है और राज्य के चारों ओर फैली पहाड़ियों को ही नीली पहाड़ियाँ कहते हैं।

असम के उत्तर में अरुणाचल और भूटान, पूरब में नागालैंड, मणिपुर और बर्मा, दक्षिण में मिजोराम और बांग्ला देश तथा पश्चिम में पश्चिम बंगाल है।

'असम' शब्द का अर्थ है जो समतल या बराबर नहीं हो या जिसके समान दूसरा कोई न हो। सम्भवतः इस प्रदेश की असमान स्थलाकृति - कहीं पहाड़ियाँ, कहीं समतल और कहीं नदियाँ - के कारण ही इसका नाम ऐसा पड़ा। दूसरी व्याख्या यह है कि असम असोम का अंगरेजीकरण है जो अहोम जनजाति के कारण प्रचलित हुआ। अहोम जनजाति ने यहाँ छः शताब्दियों से अधिक काल तक राज्य किया था।

असम का क्षेत्रफल ७८,५२३ वर्ग किलोमीटर है और इसकी जनसंख्या २,६६,३८,४०७ (२ करोड़ ६६ लाख ३८ हजार ४०७) है। राज्य की राजधानी दिसपुर है। यहाँ की राज्यभाषाएँ हैं - असमी और बंगला।

तेजीमाला

ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे भव्य जैंतिया पहाड़ियों से भी अधिक ऊँचाई पर एक मनोरम गाँव में एक धनी व्यापारी भृगु रहता था। उसकी एक सुन्दर बेटी थी - तेजीमाला। उसकी छोटी उम्र में ही उसकी माँ चल बसी। उसके पिता ने दूसरा विवाह कर लिया। तेजीमाला की सौतेली माँ कंचन एक निर्दय स्त्री थी। वह तेजीमाला के साथ बड़ी निष्ठुरता से व्यवहार करती थी।

तेजीमाला एक बहुत भाल सुवाली (भली लड़की) थी। वह अपनी सौतेली माँ की हर आज्ञा का पालन करती और घर का सब कामकाज करती

थी। वह डंगर (बड़े) घर में झाड़ू लगाती, बर्तन और कपड़े साफ करती, जंगल से लकड़ियाँ और नदी से पानी लाती तथा सब तरह के फुटकर कार्य करती थी। फिर भी उसकी सौतेली माँ उसकी गलतियाँ निकालती और अक्सर उसे निर्ममता से मारती-पीटती थी।

भृगु व्यापारी होने के कारण अपना माल बेचने के लिए प्रायः यात्रा पर जाया करता था। अपने दिऊता (पिता) की अनुपस्थिति में तेजीमाला को अपनी निर्दयी सौतेली माँ की मेहरबानी पर ही रहना पड़ता था। तब बेचारी तेजीमाला का जीवन और भी दूभर हो जाता। उसकी सौतेली माँ पहले से कहीं अधिक काम करवाती। उसे खाना पकाना पड़ता, उसे बाजार जाना पड़ता और पंसारी के सामान के भारी थैले ढोने पड़ते। यहाँ तक कि गाँव के बाहर धान के खेतों में अपने चाचाओं के साथ हाथ बँटाने के लिए भी उसे भेजा जाता।

तेजीमाला को सिर्फ एक बार खाना दिया जाता, जिसमें नमक-मिर्च के साथ एक कटोरा पतला माँड़ मात्र होता।

चाय बगान

असम का नाम लेते ही जो सबसे पहले मन में विचार आता है, वह है चाय! असम विश्व के विशालतम चाय उत्पादक क्षेत्रों में से एक है। भारत के इस पेय फसल के कुल उत्पादन के ५० प्रतिशत से भी अधिक का योगदान असम का है।

संभवतः विश्व की प्रथम चाय कम्पनी - द असम कं. सन् १८३९ में १२ फरवरी को असम में बनाई गई थी और नोबेल पुरस्कार विजेता रवीन्द्रनाथ ठाकुर के पितामह द्वारकानाथ ठाकुर इसके एक निर्देशक थे। असम की चाय अपने स्वाद और चमकीले रंग के लिए प्रसिद्ध है।

आज ब्रह्मपुत्र की घाटी में दो लाख तीस हजार हेक्टेयर्स के क्षेत्र में चाय के बगान हैं। गुवाहाटी में भी विश्व का सबसे बड़ा चाय नीलामी केन्द्र है।

जब उसके कपड़े कठिन काम करते-करते फट जाते तब उसे चिथड़ों में ही बाहर जाना पड़ता। जब उसके पिता के आने की खबर मिलती तब उसकी सौतेली माँ जल्दी-जल्दी मामूली कपड़ों के दो ड्रेस उसके लिए बनवा देती।

जब भी सौतेल माँ की मर्जी होती तेजीमाला को पीट देती। किन्तु तेजीमाला ये सारे अत्याचार दृढ़ता के साथ सह लेती थी। बह अपनी सौतेली माँ के विरुद्ध एक शब्द भी किसी को नहीं कहती।

समय के प्रवाह के साथ तेजीमाला एक सुंदर तिरुता (युवती) के रूप में बड़ी हो गई। उसके पिता ने महसूस किया कि अब उसके विवाह का समय आ गया है। उसने उसके लिए एक योग्य बर की खोज शुरू कर दी। जैसे ही कंचन को अपने पति का यह निर्णय मालूम हुआ, वह चिढ़ गई। यदि तेजीमाला विवाह के बाद चली जायेगी तो फर्श की सफाई कौन करेगा, जलावन और पानी कौन लायेगा और कौन धोयेगा कपड़े? किन्तु वह चुपचाप रही, क्योंकि बह जानती थी कि उसका पति अपनी बेटी को बहुत प्यार करता है और यदि उसे यह पता चल गया कि मैं उसे घर में नौकरानी बनाकर रखना चाहती हूँ तो वह मुझे दण्ड देगा।

भृगु ने दुल्हे की तलाश में दूर-दूर के देशों की यात्रा की। अन्ततोगत्वा उसे एक सुंदर और बुद्धिमान युवक मिल गया। उसने उसके साथ अपनी बेटी के विवाह का प्रस्ताव रखा और युवक के माता-पिता ने भृगु जैसे अच्छे परिवार के साथ

कला और हस्तशिल्प

हथकरघा की बुनावट असम की जीवन शैली है। रूई, मूगा रेशम, पाट रेशम तथा अरनी रेशम हथकरघा वस्त्र के आधारभूत कच्चे पदार्थ हैं। मूगा रेशम में एक दुर्लभ चमक और प्राकृतिक सुनहला रंग है और हर धुलाई के बाद यह अधिक चमकदार हो जाता है। अरनी गर्म रेशम है और सर्दियों के लिए अधिक उपयुक्त है।

बाँस की बुनावट असम का दूसरा लोकप्रिय हस्तशिल्प है। बाँस का प्रयोग मुख्यतः घरेलू उत्पादनों जैसे - चलनी, कुला (सूप) और खोरही (छोटी टोकरी) को बनाने में किया जाता है। असमी किसान खेतों पर काम करते समय बाँस का रंग बिरंगा टोप पहनते हैं।

संबंध स्थापित करने में अति प्रसन्नता व्यक्त की। जब कंचन को यह खबर मिली तो वह ईर्ष्या से जल-भुन गई। "तेजीमाला उस घर में रानी के समान रहेगी और मुझे अकेले फर्श रगड़ना पड़ेगा, धुलाई और सफाई करनी पड़ेगी।" उसने मन में सोचा।

भृगु ने अपने होनेवाले दामाद के लिए बड़ी योजनाएँ बनाईं। उसने सोचा, "यह एक होनहार युवक है, हमारी बेटी का आदर्श जोड़ा। किन्तु इसे सांसारिक बातों में अधिक अनुभव की आवश्यकता है।" इसलिए विवाह के पूर्व वह युवक को एक लम्बी यात्रा पर ले गया। उन्होंने अनेक देशों के बड़े-बड़े नगरों का भ्रमण किया।

इधर तेजीमाला की सौतेली माँ लड़की के भाग्य में आनेवाले सुनहले भविष्य को हजम न कर सकी। उसने उससे पिंड छुड़ाने का निश्चय कर लिया।

एशिया का प्रथम तेल परिष्करणशाला (ऑयल रिफाइनरी)

असम के ऊपरी भाग में स्थित डिगबोई में एशिया की सबसे पहली तेल-परिष्करणशाला की स्थापना की गई। इसने हमारे देश में तेल व पेट्रोलियम उद्योग की आधार शिला रखी।

कच्चा तेल सबसे पहले यहाँ १८६७ में मिला, उससे ठीक ८ साल पहले, जब कर्नल ड्रेक को पेनसिलवानिया में तेल का पता चला।

दिलचस्प बात यह है कि डिगबोई में तेल की खोज का मार्गदर्शन एक हाथी द्वारा किया गया। कहा जाता है कि जब एक हाथी को डिब्रू-सादिया रेलवे लाइन पर काम के लिए लगाया गया, वह घने जंगलों के अंदर चला गया और अपने पैरों में तेल के साथ लौटा।

आज अपने अस्तित्व के एक सौ साल के बाद डिगबोई भारतीय उपमहाद्वीप में सबसे पुरानी रिफाइनरी मानी जाती है।

एक दिन उसने तेजीमाला को बुलाकर धान का भूसा निकालने में मदद करने के लिए कहा। जब वह भोली लड़की धान पर काम कर रही थी तब सौतेली माँ ने उसके सिर पर भारी मूसल दे मारा। उसके प्राण पखेरू तत्काल उड़ गये।

कंचन चीखने-चिल्लाने और विलाप करने लगी। पड़ोसी तुरंत दौड़े आये और पूछा, "आइतो कि (क्या हुआ)?" कंचन ने दुखी होने का बहाना बनाकर अपना माथा पीटना शुरू कर दिया और कहा, "मैं अब क्या करूँ? मेरी प्यारी बेटी मर गई। उसका विवाह निश्चित

काज़ीरंगा राष्ट्रीय पार्क

असम के केन्द्र में स्थित ६८८ वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र मानव जन संख्या से सुरक्षित और विघ्न रहित है। यह काज़ीरंगा का राष्ट्रीय पार्क है - प्रसिद्ध एक सींगवाले गैंडे का घर। बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में, ब्रिटिश राजकाल में जब भारी संख्या में गैंडों का शिकार किया जा रहा था, तब ये विलुप्ति के कगार पर थे। तब ब्रिटिश सरकार इन पशुओं की दुर्दशा के प्रति जागरुक हुई और पार्क को सुरक्षित बन के रूप में घोषित कर शिकार के लिए निषिद्ध कर दिया। सन् १९४० में इसे बन्य जीवन अभयारण्य का दर्जा दिया गया और १९७४ में इसे राष्ट्रीय पार्क के रूप में घोषित किया गया। आज ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे स्थित यह पार्क एक हजार से भी अधिक गैंडों का आवास स्थल है। अन्य पशुओं में यहाँ जल-भैंस, दलदल के हिरण और गंगा के डॉलफिन देखे जा सकते हैं।

हो गया था। हम लोग कितने खुश थे ! अब अचानक ऐसा हो गया !'' उसने पड़ोसियों को विश्वास दिला दिया कि यह एक दुर्घटना थी। उन सबने सहानुभूति व्यक्त की और बाग में तेजीमाला की समाधि बना दी।

एक सप्ताह के पश्चात लड़की की समाधि पर से एक लता उगी। यह कद्दू की लता थी जो चुटी खमय (कम समय) में दिघल और दिघल (लम्बी और लम्बी) होती चली गई। शीघ्र ही इसमें कद्दू के अनेक बड़े-बड़े फल निकले। एक दिन एक राहगीर एक कद्दू चुराकर तोड़ना चाहता था। लेकिन जैसे ही उसने कद्दू पर हाथ रखा कि एक आवाज आई : 'ओह, कृपया मुझे मत छुओ। मैं कद्दू नहीं हूँ। मैं तेजीमाला हूँ।'' राहगीर इतना डर गया कि वह वहाँ से तुरंत भाग गया। तेजीमाला की सौतेली माँ ने भी कद्दू की यह आवाज सुनी। ''हे ईश्वर !'' उसने सोचा। ''क्या होगा जब मेरे पति को कद्दू से सचाई का पता चलेगा।'' इसलिए शैतान स्त्री ने लता को नष्ट कर दिया।

कुछ खोप्ता (सप्ताह) के बाद कद्दू की लता के स्थान पर मिर्च का एक पौधा उगा। शीघ्र ही पौधा रोंगा (लाल) और खौजिया (हरी) मिर्च से लद गया।

उस मार्ग से गुजरनेवाले चरवाहे कुछ मिर्चो को तोड़ना चाहते थे। लेकिन एक आवाज ने अनुरोध किया : ''कृपया मुझे मत छुओ। मैं मिर्च

का पौधा नहीं हूँ, मैं तेजीमाला हूँ।'' चरवाहों ने सोचा कि तेजीमाला का भूत बोल रहा है, इसलिए वे डर के मारे भाग गये।

तेजीमाला की सौतेली माँ ने तब मिर्च के पौधे को नष्ट कर दिया और उसे ब्रह्मपुत्र नदी में फेंक दिया। नदी में जहाँ पर मिर्च का पौधा गिरा था, वहाँ पर एक सुंदर कमल उग आया।

जब कमल खिला हुआ था, तभी भृगु युवक के साथ लाल नदी में नौका द्वारा अपनी यात्रा से वापस लौट रहा था। जब युवक की नज़र कमल पर पड़ी तब उसने उसे तोड़ने के लिए हाथ बढ़ाया।

''कृपया मुझे मत छुओ। मैं कमल नहीं हूँ। मैं तेजीमाला हूँ।'' कमल के फूल ने कहा। युवक ने चकित होकर अपना हाथ हटा लिया, लेकिन तेजीमाला के पिता को आघात लगा। उसने अपनी बेटी की मृत्यु का समाचार नहीं सुना था। यह आवाज निश्चित रूप से उसकी बेटी की जैसी थी। ''ओह! मेरी पुत्री, तुम कहाँ हो? कृपया मेरे पास अहा (आओ)। मेरी प्यारी तेजी।'' उसके पिता ने पुकारा।

अपने पिता के स्नेह भरे स्वर को सुनकर सुंदर कमल अचानक तेजीमाला में बदल गया। वह दौड़कर पिता की भुजाओं में चली गई और उसे अपनी पूरी कहानी सुना दी। अपनी बेटी की दुख भरी कहानी सुनकर कि कैसे उसकी क्रूर पत्नी द्वारा उसके साथ दुर्व्यवहार किया गया और फिर उसकी हत्या कर दी गई, भृगु को बहुत क्रोध आया।

आखिरकार वे घर पहुँचे। कंचन तेजीमाला को अपने पिता और युवक के साथ अपने दरवाजे पर देखकर हक्का-बक्का हो गई। वह समझ गई कि अब खेल खत्म हो गया है। भृगु ने दुष्ट कंचन को घर से निकाल दिया। युवक के साथ तेजीमाला का विवाह बड़े धूमधाम से संपन्न हुआ।

दर्शनीय स्थल

नीलाचल पहाड़ियों के शिखर पर १६० मीटर की ऊँचाई पर कामाख्या मंदिर अवस्थित है। इसे देश की अनेक शक्ति पीठों में से एक माना जाता है। यह भारत के पूजनीय मंदिरों में से एक है। यह मंदिर नारी शक्ति के मूल तत्व कामाख्या देवी को निवेदित है।

समाचार झलक

संतोलन करतब

तुम पाठकों में से छोटी आयु के बच्चे अपने स्कूल के वार्षिक खेल-कूद में होनेवाले अण्डा और चमच दौड़ से परिचित होंगे। इसमें प्रतियोगी को एक विशेष दूरी तक चलते हुए एक चमच पर रखे हुए अण्डे को सन्तुलित रखना होता है। (प्रायः अण्डे के स्थान पर नीम्बू रखा जाता है।) बेशक, यदि तुम नीम्बू को गिरने देते हो तो दौड़ से बाहर हो गये। अब कल्पना करो, तुम्हें एक खास दूरी तक चलते हुए अपने खाली सिर पर दूध से भरी १० इंच लम्बी बोतल को सन्तुलित रखना है। जो बोतल को बिना गिराये दूसरी छोर तक पहुँच जाते हैं, वे चाहें तो दूध पी जा सकते हैं और पुरस्कार के दावेदार भी हो सकते हैं। भारत में जन्मे सुरेश जोचिम ने यही कर दिखाया जब वह आस्ट्रेलिया के सेन्ट्रल सिडनी में अपने सिर पर दूध भरी बोतल को सन्तुलित रखते हुए (जरा लम्बी सांस ले लो) १३३ कि.मी. की दूरी तय करने में सफल हो गया। दूसरे किनारे पर पहुँचते-पहुँचते दूध तो खराब हो गया होगा, किन्तु पुरस्कार तो मिला ही, साथ ही गिन्निज़ बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में स्थान भी।

चींटियों के लिए अजायब घर

यह चींटी के आकार का अजायब घर नहीं हो सकता, क्योंकि इसमें एक लाख चींटियाँ रहती हैं। यह अजायब घर थाईलैण्ड में कासेट-सार्ट विश्व विद्यालय में है जो वन विभाग के अधीन कार्य करता है। लगभग एक सौ चींटी परिवार और जीवित चींटियों की ५५० नस्लें अजायब घर में प्रदर्शित की गई हैं। यहाँ १ लाख चींटियों को अलकोहल में सुरक्षित भी रखा गया है। अतः यदि तुम्हें थाईलैण्ड (पूर्ववर्ती स्याम, श्वेत हाथियों के लिए प्रसिद्ध) जाने का मौका मिले तो अपने पर्यटन-स्थलों की सूची में चींटियों के अजायब घर को शामिल करना न भूलना।

विघ्नेश्वर

एक दिन नारद मुनि कैलास की ओर जा रहे थे। उस वक़्त कंटकमुखी नामक एक यक्षिणी मज़ाक़ करती हुई बोली, ''नारद, मेरे साथ विवाह करो। हे ब्रह्मपुत्र ! ब्रह्मा के बंधनों से मुक्त हो जाओ।''

इसपर नारद बोले, ''मैं कलहभोज हूँ ! कलह पैदा करने वाली मुझे मिल जाय, तब न विवाह करूँ?''

''मैं तुमसे भी ज़्यादा झगड़ालू हूँ।'' यक्षिणी ने कहा।

उस वक़्त विघ्नेश्वर और कुमारस्वामी हाथों में हाथ डाले चले आ रहे थे। उन्हें देख नारद ने यक्षिणी से पूछा, ''क्या तुम उन दोनों भाइयों के बीच झगड़ा पैदा कर सकती हो?''

''उफ़ ! यह कौन-सी बड़ी बात है !'' यों कहकर कंटकमुखी दल सरोवर में कूद पड़ी और सोने के कमल के रूप में बदलकर बोली, ''मैं पार्वती और परमेश्वर के सुपुत्र के वास्ते खिल गई हूँ।''

इस पर दोनों भाई उस फूल को हाथ में लेकर झगड़ा करने लगे, ''यह फूल मेरा है !'' कुमारस्वामी ने कहा, ''हे गणेश, तुम तो माँ के द्वारा बनाये गये खिलौने हो, मैल के ढेले हो !'' इसके जवाब में विघ्नेश्वर बोले, ''तुम तो गंदे शरवण सरोवर में पैदा हो गये हो न !''

कुमारस्वामी नाराज़ होकर अपनी मुट्ठी बांधकर गणेश पर प्रहार करने को हुए, तब विघ्नेश्वर ने अपनी सूँड़ से कुमारस्वामी की कमर कसकर ऊपर

प्रदक्षिणा कैसे कर सकता हूँ? मेरे छोटे भाई को ही स्वर्ण कमल लेने दीजिए।''

गणेश की बातें सुनकर नारद बोले, ''विघ्नपति, मैं पार्वती और परमेश्वर के दर्शन करने आया था, फिर मिलूँगा।'' यों कहकर नारद चले गये।

इसके बाद न मालूम विघ्नेश्वर के दिमाग में क्या सूझा, वे झट उठकर चले गये और एक टीले पर बिराजमान पार्वती और परमेश्वर की तीन बार प्रदक्षिणा की। तब अपने छोटे भाई का वहीं खड़े होकर इंतजार करने लगे।

बड़ी देर बाद नाना यातनाएँ झेलकर कुमारस्वामी विश्व की प्रदक्षिणा समाप्त कर लौट आये और अपने मयूर वाहन से उतर पड़े। विघ्नेश्वर अपने छोटे भाई के साथ गले मिलकर बोले, ''भैया, बेचारे तुम बड़ी मुसीबतें झेलकर विश्व की प्रदक्षिणा कर लौटे हो! स्वर्ण कमल तुम्हीं ले लो। वैसे जीत तो मेरी ही हुई, लेकिन मुझे उस कमल की ज़रूरत नहीं है!''

कुमारस्वामी ने अचरज में आकर पूछा, ''यह कैसे?''

''तुम से पहले ही मैं तीन बार विश्व की प्रदक्षिणा कर चुका हूँ! चाहे तो तुम किसी से अपनी शंका का समाधान कर लो।'' विघ्नेश्वर ने जवाब दिया।

इस पर तीन बार आकाशवाणी सुनाई दी, ''विघ्नेश्वर ही विजयी हुए हैं!''

कुमारस्वामी ने सच्ची बात जान ली और

उठाया। कुमारस्वामी ने विघ्नेश्वर की तोंद पर भाले का निशाना बनाया। इसे देख नारद मुनि दौड़े-दौड़े आये और बीच-बचाव करते बोले, ''आप दोनों एक दाँव लगाइये!''

कुमारस्वामी ने सोचकर कहा, ''जो व्यक्ति पहले इस विश्व की परिक्रमा करके लौटेगा, यह स्वर्ण कमल उसीका होगा।''

''वाह, यह शर्त बहुत बढ़िया है!'' नारद बोले। फिर क्या था, कुमारस्वामी उसी वक़्त मोर पर सवार हो विश्व की परिक्रमा करने चल पड़े। विघ्नेश्वर लुढ़क कर बैठ गये, तब नारद ने पूछा, ''विघ्नेश्वर, आप क्या करने वाले हैं?''

विघ्नेश्वर ने निराश होकर कहा, ''महामुनि, जिसके भाग्य में जो बदा है, वही होगा। मैं इस तोंद के साथ छोटे चूहे पर सवार हो विश्व की

बिनायक के सामने साष्टांग प्रणाम करके बोले, ''भैया ! मैंने भारी तपस्या करके ब्रह्मज्ञान प्राप्त तो कर लिया है ! पर आप तो कुशाग्र बुद्धि हैं। मैं आपके सामने किस खेत का मूली हूँ? आपके बाद ही मेरी गणना होती है। मैं तारकासुर के साथ युद्ध करने जा रहा हूँ ! मुझे आशीर्वाद दीजिए !''

विघ्नेश्वर ने कुमारस्वामी के कंधे पकड़कर उठाया और बोले, ''मेरे छोटे भैया, तुम कभी इस बात को भूल से भी अपने मन में आने न दो कि मैं बड़ा हूँ और तुम छोटे हो ! तुम किसी कारण को लेकर अवतरित हुए हो ! तुम्हारे कहे अनुसार माताजी के द्वारा खेल-खेल में तैयार किया गया खिलौना हूँ मैं ! तुम्हारे ही वास्ते पार्वती और शिवजी का विवाह संपन्न हुआ है ! तुम उन दोनों के अनुराग का फल हो ! तुम्हारी बिजय पहले ही निश्चित है ! तारकासुर ने तुम्हारे हाथों में देह-त्याग का बर माँग लिया है ! तुम सुब्रह्मण्येश्वर हो ! मेरे वास्ते सर्वत्र मंदिर होंगे, लेकिन तुम्हारे वास्ते कुछ प्रदेशों में बड़े-बड़े तीर्थ, बड़े-बड़े मंदिर और गोपुर होंगे। तुम एक प्रमुख देवता के रूप में पूजा पाओगे। जल्दी तारकासुर का वध कर डालो।''

इस पर कुमारस्वामी देवताओं के सेनापति के रूप में तारकासुर पर हमला करने चल पड़े। इसके बाद यक्षों के अधिपति कुबेर ने कंटकमुखी को शाप दिया, ''अरी मायावी, पापिन ! तुमने शिवजी के पुत्रों के बीच कलह पैदा किया है ! इसलिए तुम गोखरू बन जाओ !'' कंटकमुखी

की बिनती पर कुबेर ने बताया कि विघ्नेश्वर के अनुग्रह के द्वारा ही तुम्हारे शाप का बिमोचन होगा। कंटकमुखी गोखरू के रूप में पृथ्वी पर अंकुरित हुई।

कुमारस्वामी ने देवताओं का सेनापति बनकर तारकासुर का संहार किया। इंद्र की पुत्री देवयानी के साथ कुमारस्वामी के बिबाह की तैयारियाँ की गईं। मगर कुमारस्वामी ने यह कहकर उस विवाह को रोक दिया कि बड़े भाई के बिबाह के बिना छोटा भाई कैसे शादी कर सकता है?

इस पर पार्वती ने विघ्नेश्वर को समझाया, ''बेटा, छोटे भाई की शादी होनी है, तो तुम्हें बिबाह करना होगा ! यही न्याय संगत है !''

''माँ, ऐसे निरर्थक नियमों का तुम भी पालन करती हो? मुझ जैसे एकदंत को शादी के झंझट में

क्यों खींचना चाहती हो?'' यों विघ्नेश्वर ने प्रथम विघ्न के रूप में अपनी असहमति प्रकट की।

इसके बाद विघ्नेश्वर अपने विवाह को रोकने के लिए कई विघ्न और बहाने बनाने लगे। एक बार पार्वती ने विघ्नेश्वर पर बहुत ज़्यादा दबाव डाला। इस पर विघ्नेश्वर ने बाधा डाली, ''माँ, छोटे भाई ने तपस्या की, पर मैंने नहीं की, मुझे भी तो तपस्या करनी है न?'' यों कहकर विघ्नेश्वर तपस्या करने चल पड़े।

इन्द्र ने विघ्नेश्वर की तपस्या भंग करने के लिए सारी अप्सराओं को भेजा, लेकिन अर्क नामक अप्सरा ने साफ़ इनकार कर दिया। तब इन्द्र ने उसे शाप दिया, ''तुम आक बनकर पृथ्वी पर उगो।''

विघ्नेश्वर ने अपनी तपस्या के लिए उचित स्थान का चुनाव किया। वहाँ पर गोखरू के झाड़ चारों तरफ़ फैले हुए थे। आक की झाड़ियों में कलियाँ खिलने की हालत में थीं। विघ्नेश्वर का तप चालू था। अप्सराओं ने वहाँ पर पहुँचकर अपना नृत्य शुरू किया। उनके पैरों में गोखरू चुभने लगी। तब वे अप्सराएँ कराहते हुए आर्तनाद करने लगीं। इस पर बिघ्नेश्वर का ध्यान भंग हुआ। उन्होंने आँखें खोलकर देखा। उनके मन में गोखरू की झाड़ियों के प्रति दया आई। अप्सराएँ डर के मारे दौड़ते-गिरते-लंगड़ाते भाग गईं। गोखरू के रूप में पैदा हुई यक्षिणी कंटकमुखी विनती करने लगी, ''भगवन, मैं आप दोनों भाइयों के बीच झगड़ा पैदा करके कुबेर के शाप का शिकार हो इस हालत में पड़ी हुई हूँ। मुझ पर अनुग्रह कीजिए।''

वह भादो का महीना शुक्ला चौथ का दिन था। उसी दिन बिनायक चौथी पड़ती थी। विघ्नेश्वर ने कंटकमुखी का शाप विमोचन करके कहा, ''विनायक चौथी के दिन लोग तुम्हारे गोखरू के फलों को विकट विनोद के रूप में काम में लायेंगे। तुम अब जा सकती हो!''

इसके बाद यक्षिणी अलकापुरी में पहुँची। उस समय आक ने निवेदन किया, ''स्वामी, मुझ पर भी अनुग्रह कीजिए! मैं इन्द्र की आज्ञा का तिरस्कार करके अछूत बनकर इस हालत में पड़ी हुई हूँ। मैं अर्क नामक अप्सरा हूँ! आपके प्रति मैं अपार श्रद्धा-भक्ति रखती हूँ।''

विघ्नेश्वर ने आक को समझाया, ''इस सृष्टि

के भीतर अछूत कलियों और फूलों को भी मैं प्रेमपूर्वक माला के रूप में धारण करूँगा। तुम द्वापर युग में कुब्जा बनकर जन्म लोगी। कृष्ण तुम्हें स्वीकार करेंगे। तुम्हारे शाप का विमोचन हो गया है। अब तुम खुशी के साथ घर चली जाओ। इंद्र या और किसी के द्वारा भी तुम्हें कोई भय न होगा! तुम्हें कोई भी शाप छू न सकेगा! आक की जड़ें आयुर्वेद के औषधों में काम देंगी, आक के पात सूर्य के लिए प्रिय होंगे।''

इस पर अर्क अप्सरा के रूप में स्वर्ग में चली गई। विघ्नेश्वर कैलास में चले गये। तब पार्वती ने समझाया, ''बेटा, तुम्हारी तपस्या तो समाप्त हो गई है न! अब तुम विवाह करो।'' इसके जवाब में विघ्नेश्वर बोले, ''तपस्या का समाप्त होना कैसे? अभी तक मैंने शुरू भी नहीं की। मैं फिर से तपस्या करने जा रहा हूँ।'' यों कहकर विघ्नेश्वर ने तपस्या के लिए दूसरा स्थान चुन लिया। वह प्रदेश सांपों की बांबियों से भरा था। उनके बीच बैठकर विघ्नेश्वर ने तपस्या शुरू की। बांबियों से सांप निकल आये, अपने फन फैलाकर फुत्कारते हुए विघ्नेश्वर का पहरा देने लगे। तब इंद्र ने मूषिकासुर के अनुचरों को उकसा कर समझाया, ''हे राक्षसों, तुम्हारे मालिक मूषिकासुर को वाहन बनाये हुए विघ्नेश्वर तुम सब लोगों का संहार करने के लिए तपस्या कर रहे हैं! तुम लोग अभी जाकर इसका बदला लो।''

ये बातें सुनकर सारे राक्षसों ने विनायक पर हमला बोल दिया, तब पाताल से महा सर्प निकल आये और राक्षसों को सताने लगे। सर्पों के हमले से कई राक्षस मर गये और बचे हुए लोग अपनी

मूर्खता की निंदा करते हुए इंद्र को गालियाँ सुनाते हुए भाग गये।

इसके बाद इन्द्र ने उत्साही देवता पुरुषों के साथ अप्सराओं को भेजते हुए आदेश दिया, "तुम लोग विघ्नेश्वर के भीतर प्रेम भाव जगा दो।" यों समझाकर वे भी खुद वज्रायुध धारण करके चल पड़े। देवता लोग अप्सराओं के साथ जोड़ियों के रूप में कोलाहल करते, गीत गाते नाचने लगे। इसे देख नाग फुत्कार करते उन्हें घेरकर डंसने लगे। इन्द्र ने नागों पर अपने वज्रायुध का प्रहार करना चाहा, इस पर नाग रोष में आ गये। तब नाग लोक से सारे महा सर्प आ धमके और देवताओं को स्वर्ग तक भगा दिया। देवता और नागों के बीच एक युद्ध छिड़ गया। इन्द्र के वज्रायुध की भी परवाह किये बिना नागों ने स्वर्ग को घेर लिया और भारी उत्पात मचाया। इस पर विघ्नेश्वर बहुत प्रसन्न हुए। नागों को अपने हाथों में उठाकर चूम लिया और वे उन्हें आभूषणों के रूप में शरीर पर धारण कर कैलास में चले गये।

पार्वती विघ्नेश्वर को संपेरा के रूप में देख विस्मय में आ गईं। तब विघ्नेश्वर बोले, "माँ, पिता की संपत्ति का पुत्र को प्राप्त होना स्वाभाविक ही है न? शंकराभरण मेरे लिए भी आभूषण हैं! अलावा इसके इन नागों ने मित्र बनकर अपने प्राणों की भी परवाह किये बिना मेरी रक्षा की है! आत्मीय मित्रों का सहयोग ही सच्चा आभूषण होता है! इसीलिए मैं नागभूषण कहलाता हूँ।"

विघ्नेश्वर की बातें सुन शिवजी ने मंदहास किया। पर पार्वतीजी विनायक की इस विचित्र चेष्टाओं पर खीझ उठीं। इस प्रकार विनायक बराबर अपने विवाह के लिए विघ्न पैदा करते रहे।

पार्वतीजी ने एक बार और विघ्नेश्वर के विवाह पर जोर दिया, तब वे बोले, "माताजी, कोई महान कार्य करने पर ही व्यक्ति समर्थ कहलाते हैं। मैं भी छोटे भाई की तरह कोई महान कार्य करके जब तक समर्थ न कहलाऊँ, तब तक मैं कैसे विवाह कर सकता हूँ! इसलिए सोच-समझ कर तुम्हीं बताओ न?"

"बेटा, तुम्हारे अन्दर महानता की क्या कमी है? तुम अयोग्य थोड़े ही हो?" पार्वतीजी ने कहा।

राम भक्त

एक छोटे-से पर्वत पर राम का एक मंदिर था। मंदिर के चारों ओर बहुत बंदर थे। जो भक्त वहाँ आते थे, उन लोगों का समझना था कि रामभक्त हनुमान का अंश, थोड़ा ही सही इनमें अवश्य होगा। इसलिए जब वे राम मंदिर में आते थे, उन्हें फल, मूँगफली आदि खिलाते रहते थे।

कपिल एक दिन अपने माँ-बाप के साथ मंदिर आया। उसके माता-पिता की पूरी जायदाद उनके रिश्तेदारों ने छीन ली थी। उनके साथ बड़ा अन्याय हुआ था। न्यायाधिकारी से वे इसकी शिकायत करना चाहते थे, पर उनसे मिलना संभव नहीं हो पाया, क्योंकि न्यायाधिकारी के घर के पहरेदारों को उनके रिश्तेदारों ने बख्शीश दे रखी थी। उनसे अधिक बख्शीश देने पर ही शायद न्यायाधिकारी के दर्शन हो पाते। इतना धन उनके पास था नहीं। इसलिए अपना दुखड़ा भगवान राम को सुनाने वे आज राम मंदिर आये। प्रार्थना के बाद वे मंदिर से बाहर आये और बंदर को खिलाने लगे।

कपिल के पास एक केला था, पर उसने वह केला बंदर को नहीं दिया। दूर बैठे एक बंदर की ओर उसने देखा। उस केले को खाने की आशा उसकी आँखों में स्पष्ट गोचर हो रही थी, पर वह वहाँ से हिला नहीं। कपिल खुद उसके पास गया। वहाँ जाने पर उसने देखा कि उसे चोट लगी है और वह चलने की स्थिति में नहीं है। केला देने पर खुशी-खुशी उसने ले लिया। कपिल के पास गाँव के वैद्य का दिया गया एक लेपन था, जिसे लगाने से चोट भर जाती है।

कपिल ने वह लेपन घाव पर पोता और उससे कहा, ''यहाँ तुम्हें खाने को कुछ न कुछ मिल जायेगा। पर तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं होगी। हम मानवों के पास कितनी ही सुविधाएँ हैं, सुख

हैं। एक काम करो। इस जगह को छोड़ दो और मेरे साथ आ जाओ।''

मानवों के बीच विचरनेवाले बंदरों को उनके भाव तो मालूम हो जाते हैं, पर कह नहीं पाते। वह कपिल को देखता ही रह गया। फिर कपिल अपने माता-पिता के साथ वापस चला गया।

दूसरे ही दिन बंदर का घाव चंगा हो गया। इस पर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और उसने यह बात दूसरे बंदरों से कही। उसने कहा कि हम मनुष्यों के बीच में जायेंगे और उनके साथ रहेंगे। इस पर एक बूढ़ा बंदर हँस पड़ा और बोला, ''मानवों का विश्वास नहीं करना चाहिए। यह मत समझना कि मंदिर में जैसा वे व्यवहार करते हैं, वैसा ही व्यवहार अपने घरों में भी करते हैं। हमारे लिए यहीं रह जाना श्रेयस्कर है।''

बूढ़े बंदर की सलाह उस बंदर को सही नहीं लगी। एक दिन वह उस धनिक के साथ-साथ गया, जिसने उसे एक केला दिया था। धनवान को लगा कि साक्षात् हनुमान ही उसके घर आये। वह उसकी अच्छी देखभाल करने लगा। उसके बच्चे बंदर के साथ खेलने भी लगे। नौकर उसकी ज़रूरतें पूरी करने लगे। बंदर वहाँ आराम से रहने लगा, पर बंदर की सहज बुद्धि थोड़े ही उसे चुप रहने देती है! एक दिन उसने धनवान के घर की सारी चीज़ों को तितर-बितर कर दिया। नौकरों ने पीछा किया तो पिछवाड़े के बगीचे में भागा और वहाँ के पौधों को भी तहस-नहस कर दिया। पेडों की डालियों को उसने तोड डाला।

धनवान में उसे समझाने की सहनशक्ति नहीं थी। अब उसे लगा कि उसे घर में रहने देना जान-बूझकर आफत मोल लेनी होगी। उसके शाप से भयभीत उसने उसे न ही गाली दी, न ही उसे पीटा। एक मदारी को उसे सौंप दिया।

मदारी का नाम था बलवंत। वह कठोर हृदय का था। उसे खूब पीटकर, डरा-धमकाकर उसने उसे कितनी ही विद्याएँ सिखायीं। वह गलियों में उसे नचाता था और पैसे कमाता था। कुछ ही दिनों में वह जान गया कि यह बंदर और बंदरों से अधिक अक़्लमंद है। भय के मारे बंदर नाचता अवश्य था, पर लोगों की शाबाशियाँ व उनका ताली बजाना उसे क़तई पसंद नहीं था। बंदर को अब मालूम हो गया कि आज़ादी से बढ़कर कोई आनंद नहीं है।

एक दिन बलवंत ने बंदर को गुलाबी रंग के कपड़े पहनाये और एक गली में उसे नचाने लगा। सुंदर बंदर को देखकर उस रास्ते से गुज़रता हुआ रत्नों का एक व्यापारी बहुत आकर्षित हुआ। वह उसे एकटक देखता हुआ खड़ा का खड़ा रह गया। बलवंत ने यह देख लिया और इशारों से बंदर से बताने लगा, ''तुम उस व्यापारी के हाथ में रखी थैली चुरा लो। फिर मैं तुम्हें आज़ाद कर दूँगा।'' यों इशारे करते हुए उसने गले में बंधी जंजीर हटा दी।

बंदर धीरे-धीरे कूदता हुआ रत्नों के व्यापारी के पास गया। उसने उसके हाथ में रखी थैली तुरंत खींच ली और अपने कपड़ों में छिपा ली। फिर वह वहाँ से तेज़ी से भागने लगा। व्यापारी सन्न रह गया और दर्शक भी दाँतों तले उंगली दबाने लगे। कुछ लोगों ने बंदर पर पत्थर फेंकना शुरू कर दिया। अब बंदर डर गया। वह पेड़ों पर से होता हुआ घरों की छतों पर और घरों की छतों से होता हुआ पेड़ों पर कूदने लगा। आख़िर एक घर के पिछवाड़े के बाग में जा गिरा।

वह कपिल का घर था। तभी बग़ीचे में आये कपिल ने बेहोश बंदर को देखा। उसने तुरंत उसके चेहरे पर पानी छिड़का, जिससे वह होश में आ गया। केले खिलाकर उसने उसकी भूख मिटायी। बंदर ने उसे पहचान लिया और उसे अपना पाँव दिखाया, जिसपर कपिल ने लेपन पोता था। कपिल भी इशारा समझ गया और चकित होकर उसने माँ को बुलाया।

उसकी चिल्लाहट सुनकर उसके माँ-बाप

दोनों वहाँ आये। इस बीच बंदर ने अपने कपड़ों में छिपा रखी थैली कपिल को दी। कपिल के पिता ने थैली खोली तो उसमें चमकते हुए रत्न देखे।

कपिल का पिता दूसरे की संपत्ति को हड़प जाने के स्वभाव का नहीं था। उस थैली में उसे कागज का एक टुकड़ा भी मिला। उसमें रत्नों के व्यापारी का नाम व पता था। उसने कहा, ''बेचारा व्यापारी खोये हुए इन रत्नों को लेकर परेशान होगा। मैं अभी निकलता हूँ और उसे दे आता हूँ,'' कहता हुआ वह निकल पड़ा।

व्यापारी को रत्नों के फिर से मिल जाने की रत्ती भर भी उम्मीद नहीं थी। कपिल के पिता ने जब रत्न लौटाये तब वह आश्चर्य में डूब गया और कहा, ''इस ज़माने में तुम जैसे लोग बिरले ही

होते हैं। तुम मुझसे जो भी मदद चाहो, निःसंकोच माँगो।''

कपिल के पिता ने अपनी दुखद स्थिति बतायी। रत्नों के व्यापारी ने उसे ढाढ़स बंधाते हुए कहा, ''अच्छा हुआ, तुमने अपनी आपबीती मुझसे बतायी। वह न्यायाधिकारी मेरा अच्छा दोस्त है। चिंता मत करो, तुम्हारे साथ न्याय होगा।'' फिर वह कपिल के पिता को न्यायाधिकारी के घर ले गया। जब न्यायाधिकारी को पता चला कि उसके घर के पहरेदार घुसखोर बन गये हैं तो उसने उन्हें नौकरी से निकाल किया और कपिल के पिता को उसके रिश्तेदारों से उसकी जायदाद दिलायी।

कपिल के पिता ने जब घर लौटकर ये सारी बातें अपनी पत्नी और बेटे कपिल को सुनायीं तो कपिल बहुत ही खुश होकर बोला, ''पिताजी, इस बंदर के ही कारण हमें अपनी जायदाद वापस मिल गयी। इसे हम पालेंगे।''

''ऐसा करना ग़लत है बेटे। इसने हमारी मदद की, पर इसका यह मतलब नहीं कि हम इसकी आज़ादी छीन लें।'' कपिल के पिता ने कहा।

निस्सहाय कपिल ने बंदर की ओर देखा। उसने इशारों में कपिल के पिता के बड़प्पन की तारीफ़ की। हाँ, क्यों नहीं? क्योंकि जिन कड़वे अनुभवों से वह गुज़रा, उनसे उसने अनेक जीवन तथ्यों को भी तो जान लिया।

एक सप्ताह के बाद कपिल का परिवार बंदर को पहाड़ पर के राम मंदिर में ले गया और उसे वहाँ छोड़ दिया। कष्टों से उबारने के लिए उन्होंने मंदिर में राम की पूजा भी की। तब से लेकर कपिल का परिवार हर साल इस मंदिर में आने लगा। माता-पिता भगवान राम का दर्शन करने आते तो कपिल राम के सेवक उस बंदर को देखने आता। छोटे बच्चे कभी बंदर पर पत्थर फेंकते तो वह उन्हें समझाता, ''दोस्तो, बंदरों पर यों पत्थर फेंका मत करो। उनसे प्यार करोगे तो वे हमारे लिए रत्न ले आयेंगे। यदि उनके दर्द को समझोगे तो वे भी तुम्हारा दर्द समझेंगे। पशु क्या, राक्षस, यहाँ तक कि जड पदार्थ भी प्यार से पिघल जाते हैं। फिर, बंदर तो मामूली पशु मात्र नहीं हैं, ये भगवान राम के सेवक हैं, राम भक्त हनुमान के अंश हैं।''
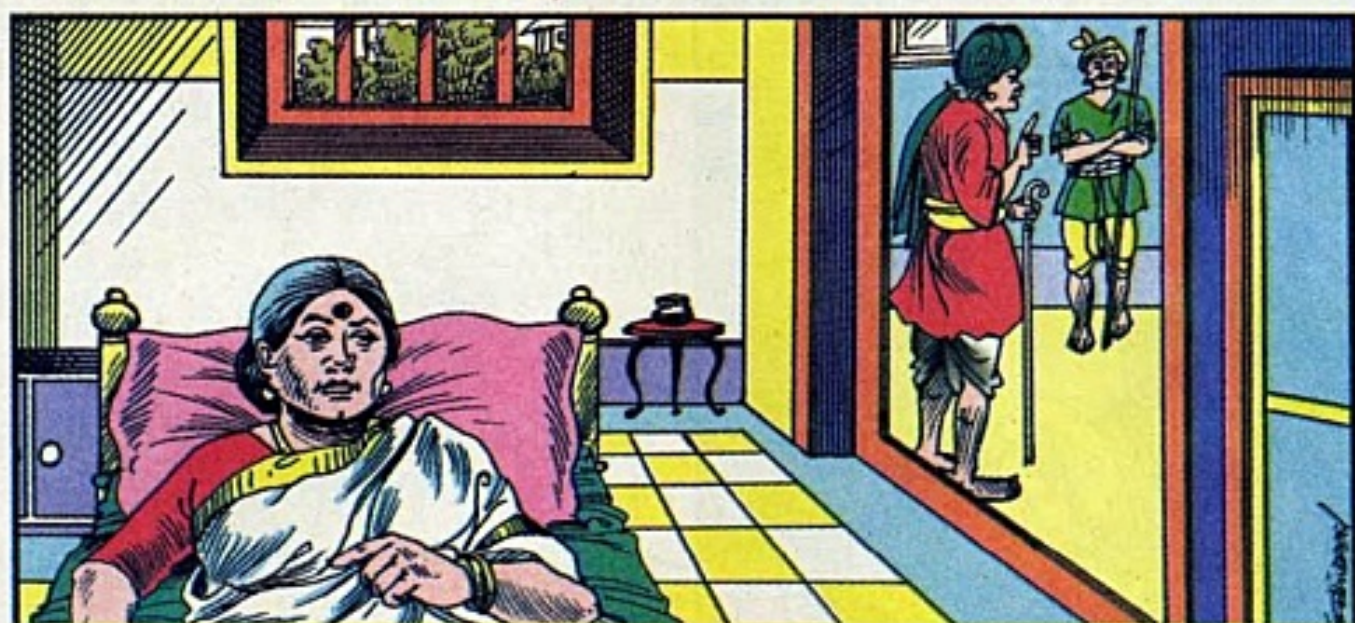
मूर्खता-हद से ज़्यादा

प्रसाद शहर की कचहरी में काम करता था। अपने गाँव शहापुर में उसका अपना एक छोटा-सा घर था और पाँच एकड़ उपजाऊ ज़मीन भी। वह निःसंतान था। पत्नी अस्वस्थ रहती थी। लंबे अर्से से नौकरी में रहने के कारण वह घर की देखभाल नहीं कर पाया। अब जल्दी ही सेवा से निवृत्त होनेवाला था। उसने सोचा कि सेवा से निवृत्त हो जाने के बाद गाँव में ही रहना अच्छा होगा, इसलिए घर की मरम्मत करा दूँ।

घर की मरम्मत कराने में और खेत को फिर से उपजाऊ बनाने में कम से कम तीन महीने लगते। कचहरी के कामों में वह काफ़ी व्यस्त था, इसलिए स्वयं यह काम संभालना उसके लिए संभव नहीं था।

परशु उसका नौकर था, जो बहुत दिनों से उसके घर में काम कर रहा था। अवश्य ही वह विश्वस्त था, पर अक़्लमंद नहीं था। और दूसरा आदमी नहीं था, जिसे यह काम सौंपा जा सकता था।

एक दिन उसने परशु को ही ये सारे काम सौंपकर आवश्यक रकम दे दी। परशु निश्चित समय के पहले ही काम पूरा करके गाँव से लौट आया। प्रसाद ने उसके काम की तारीफ़ की।

मालिक की तारीफ़ से बहुत ही खुश हो परशु ने कहा, ''मालिक, हमारे खेत में एक कुआँ होता तो बहुत अच्छा होता। फसल खूब होगी।''

प्रसाद को भी उसकी यह सलाह अच्छी लगी। उसने कहा, ''तुमने ठीक कहा। तुम एक बार और गाँव जाओ और यह काम भी पूरा करके आओ।'' इसके लिए आवश्यक रक़म भी उसे दे दी।

दो हफ़्तों के बाद परशु गाँव से लौटा। पर वह निराश लग रहा था। उसने बड़े ही दीन स्वर में कहा, ''मालिक, आपके कहे मुताबिक ही कुआँ

- कुंवर सिंग -

खुदवाया। तीस फुट की गहराई तक। पर पानी का कहीं पता नहीं।''

उसकी बातों से निराश हो प्रसाद ने कहा, ''कोई बात नहीं। इस बार चालीस फुट की गहराई तक खुदवाना। इस पर भी पानी न निकले तो पचास फुट तक खुदवाना। पानी ज़रूर निकलेगा।'' यह कहते हुए उसने थोड़ी ज़्यादा रक़म दी।

चार हफ़्तों के बाद परशु फिर निराश लौटा। आँखों में आँसू भरते हुए वह कहने लगा, ''मालिक, पचास फुट की गहराई तक खोदने के बाद भी पानी का कोई नामो-निशान तक नहीं।''

प्रसाद आश्चर्य में डूब गया। उसकी समझ में नहीं आया कि उसी के खेत में ऐसा क्यों हो रहा है, जबकि अगल-बगल के खेतों में कुएँ हैं और वे पानी से भरपूर हैं। उसकी पत्नी शांता अपने पति से कहा, ''पता नहीं, परशु वहाँ क्या कर रहा है। मेरा कहा मानिये। आप खुद एक बार वहाँ हो आइये।''

प्रसाद ने एक दिन की छुट्टी ली और परशु को साथ लेकर गाँव निकला। खेत में जाकर देखा तो वह खड़ा का खड़ा रह गया। उसका सर चकराने लगा। उसने वहाँ तीन कुएँ देखे। एक तीस फुट का, दूसरा चालीस फुट का और तीसरा पचास फुट का।

प्रसाद जानता था कि परशु अक़्लमंद नहीं है, पर यह नहीं जानता कि वह इतना बड़ा बुद्धू होगा। पर बुद्धिहीनता की भी एक हद होती है और इसने सारी हदें पार कर लीं। जब उसे लगा कि इसे लेकर उसे गालियाँ देने से कोई फ़ायदा नहीं है तो उसने उससे कहा, ''परशु, तुमने बहुत बड़ी ग़लती कर दी। पहले तीस फुट का जो कुआँ खुदवाया था, उसी में बीस फुट और खुदवाना था। तब ज़रूर पानी उभरता। एक तो पूरा धन बेकार गया, तिसपर खेत में जहाँ देखो, वहाँ गड्ढे ही गड्ढे हैं।''

मालिक की बातें सुनकर उसकी आँखों में आँसू उमड़ आये और वह उसके पाँवों पर गिर पडा। प्रसाद ने उसे उठाते हुए कहा, ''परशु, जो हुआ, सो हो गया। अब इस पर दुखी होने से क्या फ़ायदा? जो ग़लती हो गयी, उसे सुधारनी हो तो अब हमारे सामने एक ही रास्ता है। बाकी कुओं को मिट्टी से भर दो। एक कुएँ को और गहरा खुदवाओ। ज़रूर

पानी निकलेगा। मैं तो यहाँ नहीं रह सकता। कल दफ़्तर भी तो जाना है।'' यह कहकर उसने थोड़ी और रक़म उसके हाथ में थमा दी।

''हम कर भी क्या सकते हैं। परशु के सिवा हमारे लिए कोई और है भी नहीं। पानी निकले तो समझिये, हम भाग्यवान हैं।'' चिंतित शांता ने लंबी सांस भरते हुए कहा।

इस बार परशु यह खुशखबरी लेकर आया कि कुएँ में पानी आ गया।

प्रसाद ने भी खुश होते हुए कहा, ''कितने फुटों की गहराई तक खोदने पर पानी निकला?''

परशु ने कहा, ''साठ फुटों की गहराई तक जाने पर। जो भी हो, आखिर हमारे खेत में पानी से भरा कुआँ है।'' उसकी बातों में उत्साह भरा हुआ था।

परशु ने जो रक़म वापस लौटायी, उसका हिसाब लगाते हुए प्रसाद ने उससे पूछा, ''कौन-से कुएँ भरवा दिये और कौन-सा कुआँ और गहरा खुदवाया?''

परशु ने विनयपूर्वक कहा, ''पहले तीस फुटों तक जो कुआँ खुदवाया था, उसी में तीस फुट और गहरा खुदवाया। बाद के दोनों कुओं को मिट्टी से भरवा दिया।''

उसके इस जवाब को सुनकर प्रसाद निश्चेष्ट रह गया। उसने कहा, ''पचास फुटों का जो कुआँ खुदवाया था, उसी को और दस फुट खुदवाते तो काम चल जाता। तुमने तो मूर्खता की हद पार कर दी।''

अब तक चुप खड़ी शांता ने हस्तक्षेप करते हुए कहा, ''उसकी मूर्खता की बात छोड़िये। आप भी कुछ कम नहीं हैं। जब आपको मालूम हो चुका कि कुआँ खुदवाने में उसने दो बार ग़लती की तो तीसरी बार भी आपने सविवरण उसे नहीं बताया कि क्या करना चाहिए और कैसे करना चाहिए। इतनी जो रक़म बेकार खर्च हो गयी है, इसके मुख्य जिम्मेदार आप हैं। मैंने ठीक कहा न?''

'हीरोज़ ऑफ इंडिया' प्रश्नोत्तरी में अपनी प्रविष्टि भेजें और आश्चर्यजनक पुरस्कार जीतें।

भारत के नायक-१०

दो भारतीय महाकाव्य रामायण और महाभारत नायकों से भरे पड़े हैं। उनमें से कुछेक यहाँ दिये गये हैं। तुम कितनों को जानते हो?

तीन सर्वशुद्ध प्रविष्टियों पर पुरस्कार में साइकिलें दी जायेंगी।

1. मैंने अपने जन्म से अपने भाई का साथ कभी नहीं छोड़ा। मैं अयोध्या के राजा दशरथ के अनेक पुत्रों में से एक हूँ। रहस्य जान गये न? फिर बता दो मेरा नाम !

----

2. मैंने एक बार अपने बुद्धिमत्तापूर्ण मार्गदर्शन से अपने भतीजों के प्राण बचाये। मैं धृतराष्ट्र का भाई भी हूँ। मैं कौन हूँ?

----

3. मेरे भाई ने सीता का हरण किया और राम से युद्ध किया। किन्तु मैंने राम का साथ दिया और युद्ध में विजय प्राप्त करने में उनकी सहायता की। क्या तुम मुझे नहीं जानते?

----

4. मैं वायु-पुत्र हूँ, पाण्डवों में से एक। मेरा नाम क्या है?

----

5. मैं एक गिद्ध हूँ। मैंने रावण को सीता को ले जाते हुए देखा और जब राम सीता को खोजते हुए आये तब उन्हें यह बताया। क्या जानते हो मेरा नाम?

प्रत्येक प्रश्न के नीचे दिये गये स्थान को स्पष्ट अक्षरों में भरें। इन पाँचों में से आपका प्रिय आदर्श नायक कौन है? और क्यों? दस शब्दों में पूरा करें

मेरा प्रिय आधुनिक नायक .... है,

क्योंकि ....

प्रतियोगी का नाम: ....

उम्र: .... कक्षा: ....

पूरा पता: ....

....

पिन: .... फोन: ....

प्रतियोगी के हस्ताक्षर: ....

अभिभावक के हस्ताक्षर: ....

इस पृष्ठ को काटकर निम्नलिखित पते पर '५ अगस्त से पूर्व भेज दें-

हीरोज़ ऑफ इंडिया प्रश्नोत्तरी-१०
चन्दामामा इन्डिया लि.
नं.८२, डिफेंस ऑफिसर्स कॉलोनी
ईक्काडुथांगल, चेन्नई-६०० ०९७.

निर्देश :-

१. यह प्रतियोगिता ८ से १४ वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए है।
२. सभी भाषाओं के संस्करणों से इस प्रतियोगिता के लिए तीन विजेता चुने जायेंगे। विजेताओं को समुचित आकार की साइकिल दी जायेगी। यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टियाँ अधिक हुईं तो विजेता का चुनाव 'मेरा प्रिय नायक' के सर्वश्रेष्ठ विवरण पर किया जायेगा।
३. निर्णायकों का निर्णय अंतिम होगा।
४. इस संबंध में कोई पत्राचार नहीं किया जायेगा।
५. विजेताओं को डाक द्वारा सूचित किया जायेगा।

पुरस्कार देनेवाले हैं

घोड़े पर सवार होने से पहले आदित्य रामसिंह और अरुणा को निर्देश देते हैं।

अरुणा राजा के साथ यात्रा करेगी। अपने आदमियों को मार्ग में बहाल कर दो ताकि वे रवीन्द्रदेव के सिपाहियों को राजा की सुरक्षित यात्रा में गडबडी पैदा करने से रोकें।

आदित्य घोड़े पर सवार हो विद्युत गति से चला जाता है।

आग का एक गोला? यह मेरी ओर आ रहा है और मैं लगभग अंधा हो गया हूँ।

वह पदार्थ अचानक टुकड़ों में विखर जाता है और घोड़े तथा सवार को अपने अंदर समेट लेता है। आदित्य घोड़े से गिर जाता है।
यह क्या? मैं धरती पर नहीं हूँ! ऐसा लगता है मैं बीच में लटका हुआ हूँ! क्या मैं तैर रहा हूँ?
आह! यह तो प्रकाशमान आकृति है! गरुड़!
गरुड़ की एक शक्तिशाली प्रतिमा प्रकट होती है।
हो सकता है मैं उसकी शक्ति के आवरण में हूँ।
सुनो मेरे वत्स! तांत्रिक नागबंधु शैतान का अवतार है। अगले चालीस दिनों में उसके ६०वें बलि चढ़ाने के पहले उसका नाश कर दो।
जब भी अपने अंदर मेरी उपस्थिति महसूस करोगे, तुम्हारी कोई हानि नहीं होगी।
मुझे तांत्रिक के पास ले चलो, हे प्रभु! मैं उसका नाश कर दूँगा।

यह इतना आसान नहीं है आदित्य ! गुफा के अंदर वह सुरक्षित है। अगली पूर्णिमा तक प्रतीक्षा करो। वह अपने अनुष्ठान के लिए बाहर आयेगा। उसे अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने न दो।
आपके आशीर्वाद की ढाल और सत्य की तलवार लेकर, हे प्रभु ! मैं इस काम को पूरा करने में सफलता प्राप्त करूँगा।
जब विराट गरुड उसके सामने से अन्तर्धान हो जाते हैं तब आदित्य उनसे प्राप्त शक्ति को कैसे प्रयुक्त करेगा, इस बात पर वह ध्यान केंद्रित करता है।
मेरे पुत्र ! ध्यान में बैठकर अपनी दृष्टि को केंद्रित करो। तब तुममें दुष्ट-कर्मियों की गतिविधियों को जानने की शक्ति आ जायेगी।
गुफा के मंदिर में अर्धरात्रि के समय नागबंधु आप्त पुरुष और नरेन्द्रदेव को बुला भेजता है।
मैंने एक विचित्र सपना देखा... एक युवक का... वह मेरे गुरु का अंतिम बलिदान होगा।
तुम्हारे बेटे का जीवन खतरे में है। इस युवक के महल में पहुँचने से पूर्व उसे राज्य से बाहर चले जाने कहो।

तुम्हारा बेटा चाँदनी नदी के किनारे शिविर में है। वह आदित्य की खोज में है। उसे यहाँ अपने पिता के पास आने दो।
आप्त पुरुष नरेन्द्रदेव के परेशान चेहरे को देखता है।
राजर्षि ने तुम्हारे बेटे पर आनेवाली आपदा को पहले ही देख लिया है। मैं उसके पास जाकर सुरक्षा के लिए मार्गदर्शन करता हूँ।
आप्त पुरुष तांत्रिक के दो शिष्यों के साथ चाँदनी की ओर चल पड़ता है।
हमें जल्दी पहुँचना चाहिए।
नागबंधु अब नरेन्द्रदेव की ओर मुड़ता है।
आह! मैं तुम्हें कहना भूल गया। यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारा बेटा चन्द्रपुरी का राजा बने...
...तुम्हें आदित्य को मेरे पास लाना होगा। वह मेरा ६०वाँ बलि होगा।
राजा को हटाने का तुम्हारा षड्‌यंत्र सफल नहीं होगा। जब तक मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी न कर लूँ, तुम अपने बेटे के साथ राज्य से बाहर रहो। याद रखो! हम दोनों का शत्रु एक है जिसे नाश करना है। गरुड़! तुम अब जा सकते हो।
तांत्रिक नरेन्द्रदेव को रोकता है।
आदरणीय महोदय! आपकी इच्छा पूरी होगी।
क्रमश:

मनोरंजन टाइम्स

हे, तुम सब उत्साही तरुणो ! यहाँ तुम्हें विश्रांति देने के लिए कुछ है और मजा लेने के लिए भी !

उड़ाकू शैतान

इस राक्षस ने तृप्ति से अधिक खा लिया है। क्या तुम उन जन्तुओं को पहचान सकते हो, जिन्हें वह जिन्दा निगल गया है।

इन्हें खोजो !

I

ये दोनों चित्र
एक समान
लग सकते हैं।
किन्तु इनमें
आठ भिन्नताएँ हैं।

शुभ खोज !

II

ये मनोरंजक गतिविधियाँ तुम्हारी सृजनशीलता को परखेंगी और तुम्हारी निरीक्षण शक्ति को भी।

मत्स्य-कला

सरल आकृतियों और नमूनों के आधार पर एक मछली का चित्र बनाओ। तुम्हें सिर्फ एक-एक कदम पर निर्देशनों का पालन करना है।
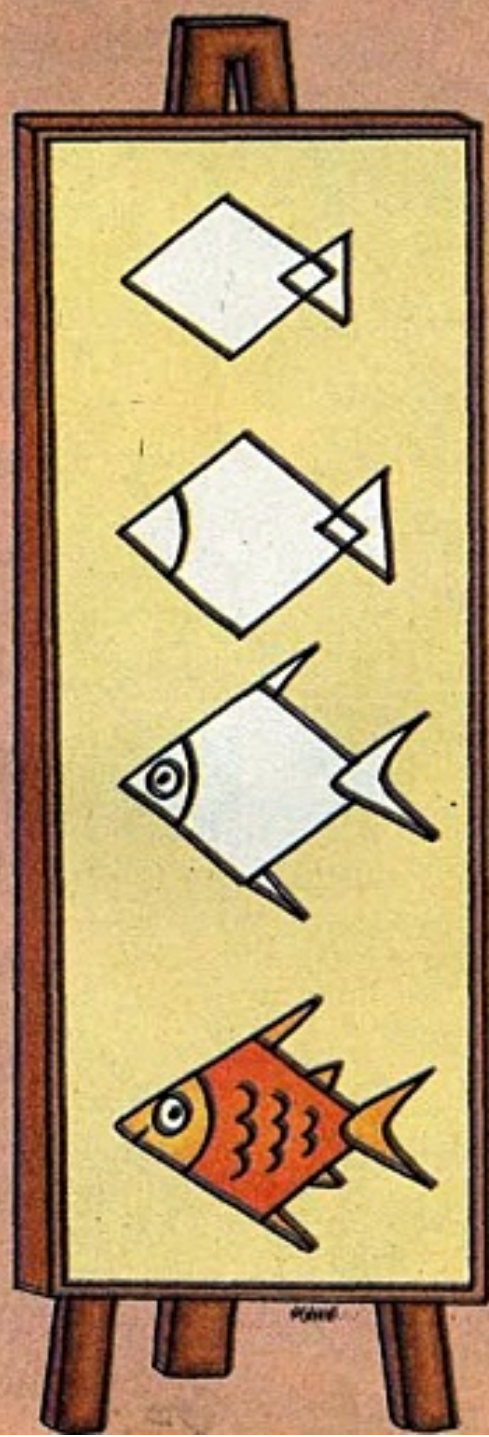
कुक्कुर राम का धर्मसंकट

कुक्कुर राम अपने मित्र मौली से मिलना चाहेगा। किन्तु वह मार्ग में भयंकर जन्तुओं को देखता है। अलावा इसके, मार्ग उलझन भरा है। अपने मित्र से मिलने में उसकी मदद करो।
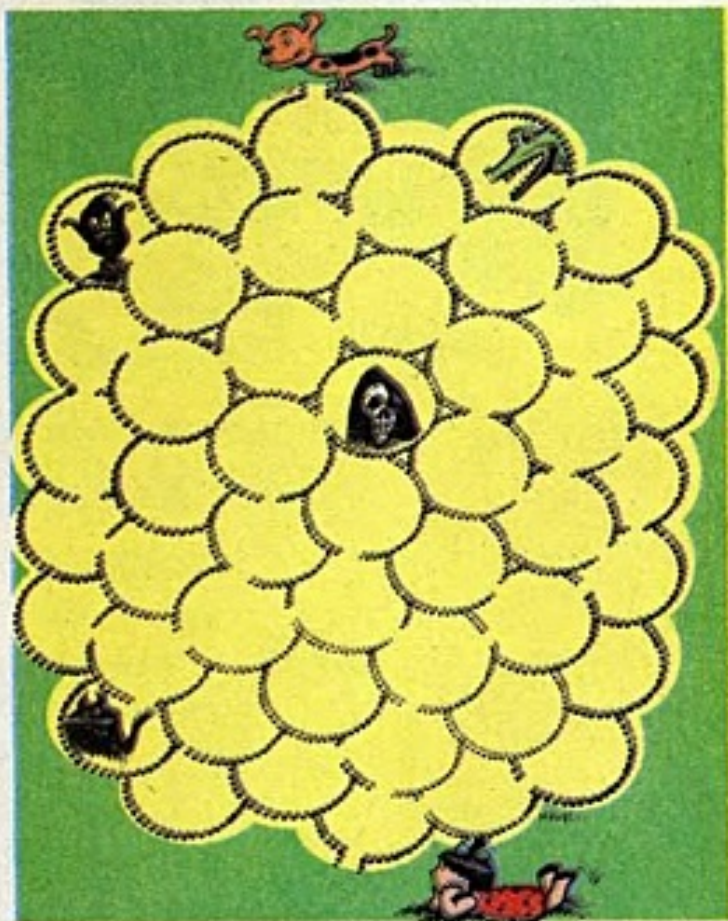
एक घसीट में

तो इस सामान्य जन्तु में विचित्र बात क्या है? यह पेंसिल की एक मात्र घसीट में बनाया गया है। क्या तुम कोशिश करना चाहते हो?

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो,
जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.
जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

मई अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

रेखा मिश्रा, C/o. श्री एल.एन. मिश्रा
शारदा निवास,
इन्द्रा कॉलोनी, सिविल लाईन्स,
सागर - ४७० ००१ (म.प्र.)

विजयी प्रविष्टि

प्यास बुझाये नल का जल।
मन ललचाये जल का फल॥

मनोरंजन टाइम्स के उत्तर

उन्हें खोजो : (१) I में लुप्त संगीत का स्वरचिह्न (२) I में लड़की के ड्रेस पर लुप्त पोल्का डॉट (३) II में लड़के के हाफ पैंट में लुप्त पॉकेट (४) I में चिड़िया में लुप्त एक पंख (५) I में लड़के के मुख में दाँत नहीं दिखते (६) II में कुत्ते की चकती लुप्त (७) II में फूलदान में बिन्दु लुप्त (८) I में चिड़िया में चकती लुप्त।

उड़ाकू राक्षस

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 600 026 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor - Viswam

असली बनाए लखपति!

नकली पहनाए हथकड़ी।
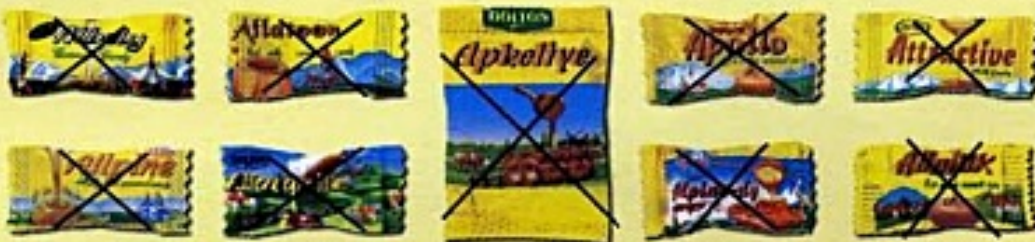
व्यापार के सदस्यों को चेतावनी दी जाती है कि Alpenliebe ब्राण्ड के जैसा दिखने वाले नकली ब्राण्ड बनाना, स्टॉक करना या बेचना कानूनन अपराध है।

जीतिए 51 लाख रुपये के इनाम!

पहला इनाम
1 एक लाख रु. का नकद इनाम

दूसरा इनाम
10,000 टाइटन डैश घड़ियाँ

तीसरा इनाम
1,00,000 परफेटी गिफ्ट हैम्पर

नीचे लिखे वाक्य को पूरा कीजिए।

Alpenliebe 'Rich................ Caramel Candy'

Send your entries to **'Alpenliebe, GPO, New Delhi - 110001'.**

Name : .... Address : ....

TERMS & CONDITIONS: Entries should only be in English sent by ordinary post addressed to **Alpenliebe, GPO, New Delhi - 110001.** Photocopies of this form can also be used. For an entry to be valid consumers must attach 10 Alpenliebe Mono wrappers and write their name and address clearly in English along with the entry. Offer closes 15th July 2002. Perfetti India Pvt. Ltd. shall not be responsible for any postal delays or lost entries. Cash Prize shall be disbursed through Cheque in favour of the Winner. Any tax liability arising out of the prizes shall be borne by the Winner. The Winners of Titan Dash Watch(es) and Perfetti Gift Hampers shall receive their Prize through registered post. The First Prize Winner shall be contacted individually for the prize and will need to establish his/her identity. Prize Winners shall be selected through draw of lots from amongst the correct entries received during the offer, in the presence of two Independent Judges, to be held on 31st July. 2002. Offer not open to the employees of Perfetti India Pvt. Ltd., McCann-Erickson India Ltd. and their immediate relatives. Decision of Perfetti India Pvt. Ltd. shall be final and binding. No correspondence shall be entertained in this regard. Disputes, if any, subject to jurisdiction of New Delhi Courts. Offer not valid in the State of Tamil Nadu.

CHANDAMAMA (Hindi) JULY 2002 Registrar of Newspaper for India No. 1087/57
Registered No. TN/CPMG-866/2002